तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष- 12, अंक - 4, मार्च 2024 , मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

खेल-खेल में मिलती शिक्षा तनाव रहित बनी परीक्षा

वर दो माँ शारदे

हे वागीशा। हंसवाहिनी,
माँ शारदे। वीणा वादिनी।
जग में हो अपनी पहचान,
हमको दो ऐसा वरदान।

शिक्षित होकर नेक बनें हम,
प्रेमभाव से एक बनें हम।
प्यार अपार आपका पाएँ,
कष्टों से फिर क्यों घबराएँ.
दया करो माँ लक्ष्य से नहीं,
भटके कभी हमारा ध्यान।

सबके हित में काम करें हम,
जग में अपना नाम करें हम।
मिले सफलता जो भी ठानें,
विपदाओं से हार न मानें।
जीवन की हर मुश्किल आगे,
खड़े रहें हम सीना तान,

दुख के बादल छँट जाएँगे,
अवरोधक सब हट जाएँगे।
सदा शीश पर वरदहस्त हो,
दुश्मन हमसे सदा पस्त हो।
ज्ञानवान हों सबसे बढ़कर ,
लेकिन मन ना हो अभिमान।

राजपाल सिंह गुलिया, पूर्व शिक्षक
गाँव- जाहिदपुर, डाकघर- ऊँटलौधा
तहसील व जिला- झज्जर (हरियाणा)

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

मार्च 2024

प्रधान संरक्षक
नायब सिंह
मुख्यमंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. जी. अनुपमा
अतिरिक्त मुख्य सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. आर.एस. ढिल्लों
महानिदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

जितेंद्र कुमार
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा
एवं
राज्य परियोजना निदेशक,
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. ऋचा राठी
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य: 15 रुपये, **वार्षिक:** 150 रुपये

Published & Printed by Ajit Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by M/ s. J.K. Offset Graphic Pvt. Ltd. at its printing press B-278, Okhla, Industrial Area, Phase -I,
New Delhi-110020

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"आपकी इच्छाशक्ति ही आपकी उपलब्धियों की ऊँचाई तय करती है।"

- बदलाव की एक बयार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 5
- राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा विकास हेतु हरियाणा द्वारा उठाए कदम 12
- शिक्षण में पुतली का प्रयोग 14
- दिव्यांगजन के अधिकार और सरकारी योजनाएँ 16
- राज्य स्तरीय लोक कला और सांस्कृतिक समागम 18
- किशोरों में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति चिंताजनक 20
- फिर चहकने लगी है रेवाड़ी की तक्षशिला 22
- अनीता विद्यार्थियों के लिए शिक्षिका नहीं, माँ है 24
- खेल-खेल में विज्ञान 28
- मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला 30
- सत्कार और तिरस्कार 31
- Inclusive Education for Children with Special Needs 32
- Faced many halts in life 38
- Unique 39
- The Significance of Holi Festival 40
- Martyrdom Day: March 23 42
- The Magic of Vasant Panchami 44
- Whatever the problem, be part of the solution 46
- Live Life While it Lasts 47
- Amazing Facts 48
- General Knowledge 49

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

हाल ही में स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा जारी की गई। यह रूपरेखा राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में निश्चित ही एक महत्त्वपूर्ण और परिवर्तनकारी कदम है। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (एनसीएफ-एसई) का विकास 21वीं सदी की आवश्यकताओं और भारतीय ज्ञान-प्रणाली के लोकाचार के साथ शिक्षा को संरेखित करने की दृष्टि से निर्देशित था। प्रोफेसर के. कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में स्कूली शिक्षा के प्रारूप में बड़ा बदलाव लाते हुए, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम बनाने के लिए एक संचालन समिति का गठन किया गया था। यह रूपरेखा प्रारंभिक स्तर से लेकर माध्यमिक स्तर तक की संपूर्ण शैक्षिक प्रणाली को कवर करती है। रूपरेखा बहु-विषयक शिक्षा, मूल्यों का पोषण, रचनात्मक शिक्षाशास्त्र को प्रोत्साहन देने और विद्यार्थियों को व्यावहारिक समस्या-समाधान के लिए तैयार करने का परिचय देती है। केंद्रीय शिक्षा और कौशल विकास एवं उद्यमिता मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान कहते हैं कि दुनिया को भारत से बहुत आशाएँ हैं। अतः अपनी वैश्विक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए, हमें प्रौद्योगिकी-संचालित शैक्षिक प्रणाली विकसित करनी होगी जो भारत के साथ-साथ विश्व समुदाय की अपेक्षाओं को पूरा करे। समग्र, समसामयिक और भारतीय मूल के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में ढाँचे की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगे कहा कि यह स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा जारी होने के साथ राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को एक महत्त्वपूर्ण प्रोत्साहन है और अगले शैक्षणिक वर्ष से नई पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराने के प्रयास जारी हैं। उन्होंने कहा कि कक्षा 3 से 12 की पाठ्यपुस्तकों को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाएगा, जिससे वे मौलिक और भविष्य के अनुरूप होंगी।

स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ-एसई) की व्यापक प्रकृति यह सुनिश्चित करती है कि इसमें स्कूली शिक्षा के सभी चरण शामिल हैं। यह सीखने के स्पष्ट मानक और दक्षताएँ निर्धारित करता है, जिससे शिक्षकों को आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और वास्तविक समझ को बढ़ावा देने में मदद मिलती है। यह ढाँचा शिक्षकों को सशक्त बनाता है, आकर्षक शिक्षाशास्त्र को प्रोत्साहित करता है और स्कूल संस्कृति और मूल्यों के महत्त्व पर बल देता है।

प्रस्तुत अंक एनसीएफ व नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन के लिए प्रदेश की तैयारियों पर केंद्रित है। सदा की भाँति आपकी प्रतिक्रियाओं व परामर्शों की अपेक्षा रहेगी।

-संपादक

बदलाव की एक बयार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा

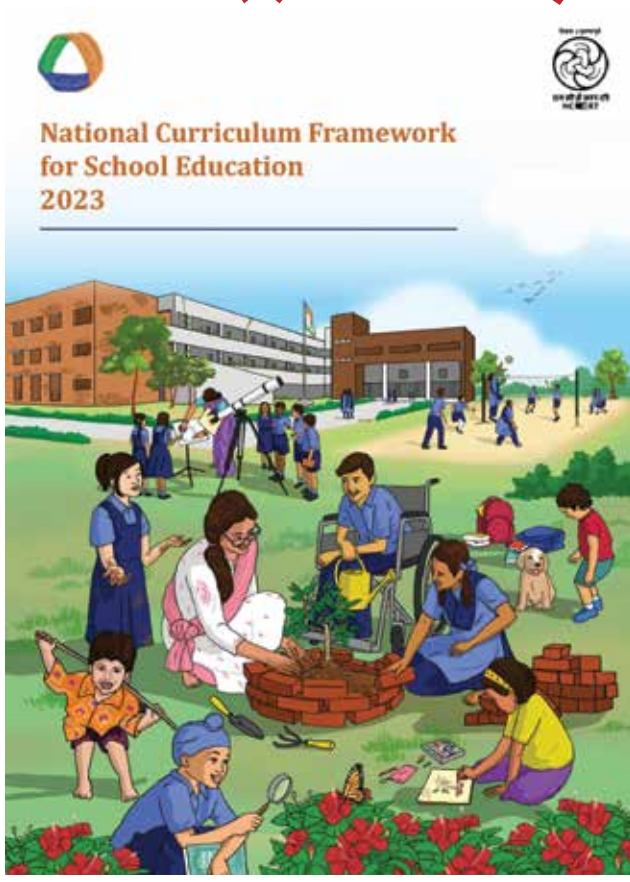

प्रमोद कुमार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) -2020 ने भारत सरकार की स्कूल शिक्षा प्रणाली में पूर्ण परिवर्तन का आह्वान किया ताकि इसे सभी विद्यार्थियों के लिए समान रूप से उच्चतम गुणवत्ता वाला बनाया जा सके तथा देश और उसके लोगों की जरूरतों और आकांक्षाओं को पूरा किया जा सके। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा का उद्देश्य विद्यालय पाठ्यक्रम में सकारात्मक परिवर्तनों को लागू कर एनईपी को धरातल पर लाने में सहायता करना है।

यह एनसीएफ, पाठ्यक्रम, लक्ष्यों, योजनाओं, व्यवस्थाओं और प्रथाओं को संदर्भित करता है तथा पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम) और उनके शिक्षा शास्त्र की विषय सामग्री को संदर्भित करता है।

इस एनसीएफ को न केवल शिक्षकों के लिए बल्कि शिक्षा के सभी हितधारकों के लिए अधिक उपयोगी और पठनीय बनाया गया है जिसमें विद्यालय के मुखिया, एससीईआरटी, डाईट के सदस्य, सीआरसी और ब्लॉक संसाधन व्यक्ति, बीईओ, शिक्षक, परीक्षा बोर्ड और पाठ्यक्रम/पाठ्यचर्या/पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तक विकास दल शामिल हैं। इसके साथ ही उन लोगों के लिए जिनकी शिक्षा में सबसे बड़ी हिस्सेदारी है। अर्थात् माता-पिता, समुदाय के सदस्य और स्वयं विद्यार्थियों के लिए भी बहुत उपयोगी है।

इस पाठ्यचर्या का सर्वप्रथम उद्देश्य है- एनईपी-2020 को धरातल पर लाना, उसका समुचित क्रियान्वयन करवाना तथा ऐसे भारत का निर्माण करना जिसके प्रत्येक नागरिक को, प्रत्येक विद्यार्थी को चाहे वह किसी भी धर्म, समुदाय, जाति, वर्ग, क्षेत्र या पृष्ठभूमि से हो, उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध कराना, जिसमें पूरा सिस्टम उसका सहायक बने, दूसरे शब्दों में, सिस्टम की वजह से कोई बाधा न हो।

इसमें नये पाठ्यक्रम का लक्ष्य एक ऐसी विद्यालय शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना होना चाहिए जो चरित्र का निर्माण करे और शिक्षार्थियों को अच्छी तरह से तैयार

करने के साथ-साथ उन्हें स्वस्थ, नैतिक, रचनात्मक, तर्कसंगत, दयालु और जागरूक नागरिक के रूप में तैयार करें। इसके अतिरिक्त उच्च शिक्षा के साथ-साथ उन्हें लाभकारी, संतुष्टिदायक, पूर्ण रोज़गार के लिए भी अच्छी तरह से तैयार करें। इसका उद्देश्य केवल सभी विद्यार्थियों को सीखने का ही नहीं होना चाहिए, अपितु अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि कैसे सीखें ताकि वे आजीवन शिक्षार्थी बन सकें और बदलते समय के लिए लगातार अनुकूल होने की क्षमता भी रख सकें। नये पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों को सांस्कृतिक, आर्थिक और लोकतांत्रिक रूप से समाज में भागीदार और योगदान करने के लिए सक्षम और प्रेरित करना चाहिए।

समाज के स्तर पर नये पाठ्यक्रम का लक्ष्य हमारे समाज को एक ऐसे समाज में बदलना होना चाहिए जो अधिक न्यायपूर्ण, न्यायसंगत, मानवीय, समृद्ध, टिकाऊ तथा भारतीय लोकाचार व संस्कृति में निहित हो। यह आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, अनुसंधान और ज्ञान सृजन, वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति, पर्यावरणीय स्थिरता, सांस्कृतिक संरक्षण और जीवंतता के संदर्भ में वैश्विक मंच पर भारत के निरंतर उत्थान और नेतृत्व को सक्षम बनाना चाहिए। शिक्षा प्रणाली को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि विद्यालयों में सामग्री, शिक्षाशास्त्र, पर्यावरण और संस्कृति सहित पाठ्यक्रम का वास्तविक अभ्यास, इन व्यक्तिगत और सामाजिक लक्ष्यों को स्पष्ट रूप से बढ़ावा दे।

पाठ्यचर्या की सामग्री-

दुनिया ज्ञान के क्षेत्र में तेज़ी से बदलाव के दौर से गुज़र रही है। विभिन्न वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति के साथ जैसे कि सूचना प्रौद्योगिकी की अधिगम और बुद्धिमत्ता का उदय, दुनिया भर में कई नौकरियों को प्रभावित कर रहा है। गहरी मानवीय क्षमताओं वाले व्यवसायों की आवश्यकता तेज़ी से बढ़ेगी- जैसे भाषाओं, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, व्यावसायिक शिक्षा और कला में बहु-विषयक क्षमताएँ, जिनमें सहानुभूति शामिल है, देखभाल, संचार और नैतिक तर्क शामिल हैं। जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय क्षरण और प्राकृतिक संसाधनों में कमी के साथ, पर्यावरणीय स्थिरता के लिए क्षमताओं की माँग भी बढ़ेगी। हमारे ग्रह को बचाने के लिए पर्यावरणीय उत्थान की आवश्यकता होगी। आज मानव का स्वास्थ्य और कल्याण एक महत्त्वपूर्ण पहलू बना हुआ है। सभी विषय क्षेत्रों में शिक्षा, साथ ही शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य और कल्याण में शिक्षा भी व्यक्ति के समग्र विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। इन कारणों से विद्यार्थियों के लिए एक बहु-विषयक शिक्षा प्राप्त करना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

कुछ प्रमुख क्षमताएँ जो 21वीं सदी के कौशल में निहित हैं, को आज की तेज़ी से बदलती दुनिया में अच्छे, परिपूर्ण और उत्पादक इंसान बनने के लिए विषय क्षेत्रों में सभी विद्यार्थियों द्वारा हासिल किया जाना चाहिए। इन क्षमताओं, मूल्यों और स्वभावों में शामिल हैं- वैज्ञानिक स्वभाव, साक्ष्य-आधारित और आलोचनात्मक समझ, रचनात्मकता और नवीनता, सौंदर्यशास्त्र और कला की भावना, मौखिक और लिखित संचार, बहुभाषावाद, स्वास्थ्य और पोषण, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य और कल्याण, सहयोग और समूह में कार्य, समस्या समाधान और तार्किक दक्षता, नैतिक और सदाचार, मानव और संवैधानिक मूल्यों का ज्ञान और अभ्यास, सहानुभूति, समावेश और बहुलवाद, मौलिक कर्तव्य, नागरिकता कौशल और मूल्य, पर्यावरण जागरूकता और संवेदनशीलता, सफाई एवं स्वच्छता और हाईजीन, सांस्कृतिक साक्षरता और पहचान।

पूर्ण वर्णित ज्ञान, क्षमताओं, मूल्यों और स्वभावों के विकास को सक्षम करने के लिए, प्रत्येक विषय में सामग्री भार को मुख्य अनिवार्यताओं तक कम करना आवश्यक होगा, ताकि अधिक प्रभावी शिक्षाशास्त्र के लिए समय और स्थान बनाया जा सके, जिसमें प्रासंगिक, बहु और अंतर-अनुशासनात्मक, अनुभवात्मक, चर्चा-आधारित और गतिविधि-आधारित शिक्षा शामिल है। यह सब एक साथ विषयों की गहरी अनुशासनात्मक समझ के साथ-साथ इन महत्त्वपूर्ण क्षमताओं, मूल्यों और स्वभावों को विकसित करेगा।

शिक्षाशास्त्र-

विषयों में अवधारणाओं की गहरी समझ को सक्षम करने के लिए और उनके अंर्तसंबंध और विभिन्न पूर्णवर्णित मूल्यों, स्वभावों और क्षमताओं के अधिग्रहण को सक्षम करने के लिए कक्षा में शिक्षाशास्त्र को अधिक प्रभावी बनाना होगा। विद्यार्थी के अध्ययन, संदर्भ और अवस्था के आधार पर, ये प्रभावी शैक्षणिक दृष्टिकोण एक विस्तृत शृंखला के होंगे जिसमें शिक्षाशास्त्र शामिल हैं, जो अधिक प्रयोगात्मक, एकीकृत, जाँच-प्रेरित, खोज उन्मुख, चर्चा-आधारित, परियोजना-आधारित, कला-आधारित, खेल-आधारित और गतिविधि आधारित हैं। इस तरह के शिक्षाशास्त्र न केवल अधिक प्रभावी होंगे, बल्कि अधिक आकर्षक और सुखद भी होंगे।

श्रेणी 10 और 12 की बोर्ड परीक्षाओं में भी काफ़ी

सुधार किया जाएगा। इन्हें 'आसान' बनाया जाएगा- बोर्ड परीक्षाओं का मुख्य उद्देश्य महीनों रटने और याद करने की बजाय दक्षताओं की समझ और उपलब्धि का आकलन करना होगा। बोर्ड परीक्षाओं के 'उच्च जोखिम' को खत्म करने के लिए सभी विद्यार्थियों को किसी भी विद्यालय वर्ष के दौरान कम से कम दो अवसरों पर बोर्ड परीक्षा देने की अनुमति दी जाएगी जिसमें केवल सर्वोत्तम अंक बरकरार रखे जाएँगे। दीर्घकाल में 'विद्यालय टर्म' (यानी, 'अर्ध वार्षिक ढंग, या 'माँग पर' बोर्ड परीक्षाएँ) के तुरंत बाद किसी विषय की बोर्ड परीक्षा देने में सक्षम होना उपलब्ध कराया जाएगा जिससे बच्चे जब चाहें अपनी गति से पढ़ सकेंगे।

पर्यावरण, प्रथाएँ और संस्कृति-

विद्यार्थियों का सीखने का अनुभव न केवल पाठ्यक्रम सामग्री और शिक्षाशास्त्र में निहित है, अपितु विद्यालय के वातावरण, प्रथाओं और संस्कृति द्वारा भी निर्धारित होता है। विद्यालयों की संस्कृति को शिक्षकों की भूमिकाओं को प्रभावी ढंग से निभाने की क्षमता के लिए बदल दिया जाएगा और यह सुनिश्चित किया जाए कि विद्यालय के सभी सदस्य, शिक्षक, विद्यार्थी, माता-पिता, प्रधानाध्यापक और अन्य सहायक कर्मचारी सभी शिक्षा का हिस्सा हैं।

शिक्षकों, प्रधानाचार्यों और अन्य विद्यालय पदाधिकारियों के नेतृत्व के माध्यम से इस प्रकार के एक स्वस्थ विद्यालय वातावरण और संस्कृति को विकसित किया जा सकता है जो विद्यार्थियों के लिए रोल मॉडल के रूप में कार्य कर सकते हैं।

पाठ्यचर्या परिवर्तनों को कैसे व्यवहार में लाना है?

पाठ्यक्रम के इन परिवर्तनों को व्यवहार में लाने के लिए यह एनसीएफ (National Curriculum Framework) औसत शिक्षक और विद्यालय की वास्तविकता (जैसे मल्टीग्रेड और बहुस्तरीय शिक्षण के व्यापक अस्तित्व) को ध्यान में रखता है और वर्तमान वास्तविकता से आदर्श के लिए एक चरणबद्ध यथार्थवादी मार्ग प्रदान करता है। शिक्षक के लिए उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखते हुए, विद्यालय और सिस्टम संस्कृति, विद्यालय और कक्षा के आकार और विद्यार्थियों के समुदाय और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के संदर्भ में शिक्षक और आसपास की प्रणाली की क्षमता और पर्यावरण जिसमें शिक्षक को काम करना पड़ता है।

यह एनसीएफ संक्षेप में, शिक्षा प्रणाली के विभिन्न अभिनेताओं और इसके हितधारकों के कार्यों और प्रथाओं पर प्रकाश डालता है ताकि इसके कार्यान्वयन को सक्षम किया जा सके- इसमें न केवल शिक्षक बल्कि शैक्षिक प्रशासक, शैक्षणिक सहायता संस्थान, विद्यालय और उनके नेतृत्व और विद्यार्थियों के परिवार और समुदाय भी शामिल हैं।

एनसीएफ का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षा प्रणाली के सामने आने वाली प्रमुख समस्याओं और वास्तविकताओं

का सामना करने में स्पष्ट और निःसंकोच होना है, जिसके बिना हमारे शिक्षकों और विद्यार्थियों के शैक्षिक जीवन में वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं होगा।

एनसीएफ का संगठन-

इस एनसीएफ को निम्नलिखित पाँच भागों में व्यवस्थित किया गया है-

भाग ए- विद्यालयी शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक वांछनीय मूल्यों और स्वभावों, क्षमताओं और कौशल तथा ज्ञान को स्पष्ट करता है जो इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक हैं। यह सामग्री चयन, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के लिए सिद्धांतों और दृष्टिकोण को भी निर्धारित करता है और विद्यालयी शिक्षा के चार चरणों के लिए तर्क और डिज़ाइन सिद्धांत देता है।

भाग बी- एनसीएफ के कुछ महत्त्वपूर्ण क्रॉस-कटिंग विषयों पर केन्द्रित हैं, जैसे- भारत से जड़ता, मूल्यों के लिए शिक्षा, पर्यावरण के बारे में सीखना और देखभाल, समावेशी शिक्षा, मार्गदर्शन और परामर्श तथा विद्यालयों में शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग।

भाग सी- में प्रत्येक विद्यालय विषय के लिए अलग-अलग अध्याय हैं। इन अध्यायों में से प्रत्येक में विद्यालयी शिक्षा के सभी प्रासंगिक चरणों के लिए परिभाषित शिक्षण मानक है, साथ ही उस विषय के लिए उपयुक्त सामग्री चयन, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन के लिए विशिष्ट दिशा-निर्देश हैं। उस भाग में फाउंडेशन स्टेज पर एक अध्याय और ग्रेड 11 और 12 में विषयों के डिज़ाइन और शृंखला पर भी एक अध्याय है।

भाग डी- विद्यालय संस्कृति और प्रक्रियाओं को संभालना है जो एक सकारात्मक सीखने के माहौल को बनाता है और वांछनीय मूल्यों और स्वभाव शृंखला को विकसित करता है।

अंतिम भाग ई विद्यालयी शिक्षा के समग्र पारिस्थितिकी तंत्र के लिए आवश्यकताओं को रेखांकित करता है जो एनसीएफ के लक्ष्यों की उपलब्धि को सक्षम करेगा। इसमें शिक्षक क्षमताओं और सेवा शर्तों, भौतिक बुनियादी रूपरेखा की आवश्यकताओं और समुदाय व परिवार की भूमिका के पहलू शामिल हैं।

सारांश-

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (एनईपी-2020) एक महत्त्वाकांक्षी नीति दस्तावेज है जिसका लक्ष्य सभी बच्चों के लिए देश में शैक्षिक परिणामों में सुधार करना है। 1986 में शिक्षा पर पिछली राष्ट्रीय नीति के बाद से तीन दशक से अधिक समय हो गया है। इस अवधि में बहुत कुछ बदल गया है- जनसांख्यिकी और शैक्षिक पहुँच और उपलब्धियों में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन; एक सूचना क्रांति; विशेष रूप से डोमेन में ज्ञान का विस्तार जैसे-संज्ञानात्मक तंत्रिका विज्ञान, कम्प्यूटर विज्ञान, गहन शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता, वैश्विक आर्थिक परिवर्तन, जलवायु परिवर्तन व पर्यावरणीय गिरावट की चुनौतियाँ। एनईपी-2020 का लक्ष्य इन परिवर्तनों पर सकारात्मक प्रतिक्रिया देना है जो 3 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक शुरू होता है।

विद्यालयी शिक्षा के सन्दर्भ में नीति की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

क. एक 5 + 3 + 3 + 4 चरण डिजाइन-विद्यालयी शिक्षा को उन आयु समूहों के लिए सबसे उपयुक्त सीखने की शैलियों के आधार पर चार चरणों में विभाजित किया गया है। 3-8 वर्ष की आयु के लिए मूलभूत चरण, 8-11 वर्ष की आयु के लिए प्रारंभिक चरण, 11-14 वर्ष की आयु के लिए मध्य चरण और 14-18 वर्ष की आयु के लिए माध्यमिक चरण।

ख. प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई)- नीति में ईसीसीई पर महत्त्वपूर्ण बल दिया गया है। अब यह अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त है कि पोषण के साथ प्रारंभिक शैक्षिक हस्तक्षेप भी महत्त्वपूर्ण है, भविष्य के सकारात्मक परिणामों के लिए मूलभूत है। प्रारंभिक बाल्यावस्था के सभी प्रासंगिक विकासात्मक क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए एक समग्र पाठ्यक्रम विकसित किया गया है।

ग. मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता- यह नीति सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करने को सर्वोच्च प्राथमिकता देती है। पढ़ने और लिखने व संख्याओं के साथ बुनियादी संचालन करने की क्षमता, सभी भविष्य की विद्यालयी शिक्षा और आजीवन सीखने के लिए एक आवश्यक आधार और अनिवार्य शर्त के रूप में देखा जाता है।

घ. पाठ्यचर्या का उद्देश्य- रटने की बजाए वैचारिक समझ और आलोचनात्मक सोच रचनात्मकता और नैतिक, मानवीय मूल्यों के विकास पर जोर दें।

ङ बहु-विषयक, समग्र और एकीकृत शिक्षा-समस्त ज्ञान की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने के लिए एक बहुविषयक दुनिया के लिए विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला, मानविकी और खेल में इस पर ध्यान केन्द्रित करें।

च. पाठ्यक्रम सामग्री में कमी- नीति प्रत्येक विषय में सामग्री भार को उसकी मूल अनिवार्यताओं तक कम करने के लिए स्पष्ट सिफारिशें करती है और इस प्रकार आलोचनात्मक सोच और समग्र शिक्षा के लिए जगह बनाती है।

छ. माध्यमिक चरण में लचीलापन और विकल्प-नीति विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन के विषयों के लचीलेपन और विकल्प में वृद्धि की सिफारिश करती है, जिसमें शारीरिक शिक्षा, कला और शिल्प और व्यावसायिक कौशल के विषय शामिल हैं ताकि विद्यार्थी अध्ययन के अपने पथ और जीवन

योजनाएँ स्वयं डिज़ाइन कर सकते हैं।

ज. व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करना- नीति का लक्ष्य व्यावसासिक शिक्षा से जुड़े सामाजिक स्थिति पदानुक्रम को दूर करना है और मुख्यधारा की शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों का एकीकरण करना है।

झ. बहुभाषावाद- भारत की बहुभाषी विरासत और कई भाषाओं को सीखने के संज्ञानात्मक लाभों को देखते हुए, नीति भारत की मूल भाषाओं सहित कई भाषाओं को सीखने की दिशा में ज़ोर देती है।

ञ. भारत में जड़ें- नीति का लक्ष्य शिक्षार्थियों में न केवल विचार में बल्कि भावना, बुद्धि और कर्मों में भी भारतीय होने का गौरव पैदा करना है। साथ-साथ ज्ञान, कौशल, मूल्यों और स्वभावों को विकसित करना है जो मानवाधिकारों, सतत विकास और जीवन और वैश्विक कल्याण के प्रति जिम्मेदार प्रतिबद्धता का समर्थन करते हैं। जिससे वास्तव में वैश्विक नागरिक का पता चलता है।

इस नीति में विद्यालय शिक्षा के लिए उपर्युक्त विजन को साकार करने के लिए विद्यालय शिक्षा के लिए एक नया और व्यापक राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ-एसई) तैयार करने की सिफारिश की गई है।

इस प्रकार एनसीएफ-एसई का लक्ष्य एनईपी-2020 द्वारा शुरू की गई परिवर्तनकारी यात्रा को जारी रखना है।

1.1 कुछ प्रारंभिक बिंदु-

इस एनसीएफ-एसई या संक्षेप में, एनसीएफ को पढ़ने के लिए उपयोग किए जा रहे सबसे बुनियादी शब्दों की एक सामान्य साझा समझ होना उपयोगी है।

1.1.1 पाठ्यचर्या-

पाठ्यक्रम शैक्षिक लक्ष्यों और उद्देश्यों की दिशा में किसी भी संस्थागत सेटिंग में विद्यार्थियों के संपूर्ण संगठित अनुभव की संपूर्णता को संदर्भित करता है।

एक पाठ्यचर्या को जीवंत बनाने वाले असंख्य तत्त्व हैं। इसमें लक्ष्य और उद्देश्य, पाठ्यक्रम, सिखाने और सीखने के लिए सामग्री, शैक्षणिक अभ्यास और मूल्यांकन, शिक्षण-अधिगम सामग्री (टीएलएम), विद्यालय और कक्षा अभ्यास, सीखने का माहौल और संस्थान की संस्कृति आदि शामिल हैं। इसके साथ-साथ अन्य घटक जैसे शिक्षक और उनकी क्षमताएँ, माता-पिता और समुदायों की भागीदारी, विद्यालय तक पहुँच के मुद्दे, विद्यालय में उपलब्ध संसाधन और प्रशासनिक और सहायक संरचनाएँ शामिल हैं।

1.1. 2 पाठ्यचर्या की रूपरेखा

पाठ्यक्रम को भारत की विविधता में गौरवशाली एकता से अवगत होना और इसके प्रति पूरी तरह से उत्तरदायी होना चाहिए। एनईपी-2020 की कल्पना, जहाँ संस्थान और विद्यालय शिक्षक अत्यधिक सशक्त है (पाठ्यक्रम विकसित करने सहित), विविधता में एकता और इसके पोषण से ऊर्जावान है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप परीक्षा-तंत्र में किए बदलाव : वीपी यादव, अध्यक्ष, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

अब हरियाणा में बोर्ड परीक्षाएँ साल में दो बार आयोजित की जाएँगी। ऐसा करने वाला हरियाणा बोर्ड देश का पहला बोर्ड है। जो परीक्षा अभी फरवरी-मार्च में हो रही है, यही परीक्षा दोबारा जून-जुलाई में भी होगी। यह कदम इसलिए उठाया गया है ताकि विद्यालयों से ड्रॉप आउट की संख्या कम की जा सके और विद्यार्थियों को तनाव-मुक्त रखा जाए। यह जानकारी हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी के अध्यक्ष डॉ. वीपी यादव ने 'शिक्षा सारथी' के उपसंपादक डॉ.प्रदीप राठौर को दी। उन्होंने बताया कि यदि विद्यार्थी पहली बार अच्छा परफॉर्म न कर पायें तो उन्हें उसी साल दूसरा अवसर भी मिल सकेगा। हालांकि यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है कि वह दूसरी बार परीक्षा देना चाहते हैं या नहीं। दोनों परीक्षाएँ देने से जिस परीक्षा में अधिक अंक आएँगे, उन्हें ही माना जाएगा।

श्री यादव ने बताया पाठ्यक्रम को एनईपी के मुताबिक अलाइन्ड किया गया है। दसवीं व बारहवीं की परीक्षा में 30 से 40 प्रतिशत प्रश्न योग्यता आधारित होंगे। किसी अध्याय विशेष के सीखने के परिणामों के अनुरूप हमने पाठ-योजनाएँ, नमूना पत्र, अंक योजनाएँ तैयार की हैं। बोर्ड ने उत्तरपुस्तिकाओं की मूल्यांकन प्रक्रिया को भी डिजिटल कर दिया है। ऐसा करने वाला भी हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड देश का पहला बोर्ड है। उन्होंने बताया कि हमने इसे सफलतापूर्वक करके दिखा दिया है। इस विधि में उत्तरपुस्तिकाएँ स्कैन कर ली जाती हैं। सितंबर में ऐसा किया था। इस तरह अंकों का स्वतः योग हो जाता है। यदि उत्तरपुस्तिका को कोई पृष्ठ मूल्यांकन के बिना रह गया हो तो सिस्टम मूल्यांकनकर्ता को इसके बारे में सूचना दे देगा। यदि विद्यार्थी ने एक प्रश्न दोबारा हल कर दिया है तो इसकी सूचना भी सिस्टम दे देगा। किसी प्रश्न में यदि अध्यापक ने अधिकतम अंक से अधिक अंक दिये हैं तो इसकी सूचना भी मूल्यांकन करने वाले अध्यापक को मिल जाएगी। यानी मूल्यांकन में जो मानवीय त्रुटियाँ रहने का अंदेशा रहता था, वे अब नहीं होंगी।

उन्होंने आगे बताया कि बोर्ड ने एक अन्य तकनीकी परिवर्तन यह भी किया है कि हर प्रश्न-पत्र में इस बार क्यू-आर कोड और अल्फा न्यूमैरिक कोड लगाया है। यदि कोई प्रश्न-पत्र लीक होता है, तो इसकी झट से जानकारी मिल जाती है कि किस परीक्षा केंद्र व किस विद्यार्थी का पेपर लीक हुआ है। उन्होंने बताया कि अब देश के अन्य बोर्ड भी हमारे से प्रेरित होकर अपने यहाँ इसे लागू कर रहे हैं। इस बार जिन केंद्रों पर पेपर लीक होने का समाचार मिला, हमने परीक्षा केंद्र पर जाकर परीक्षा के दौरान ऐसा करने वाले परीक्षार्थी को पकड़ लिया। इस कारण अब एफआईआर भी नाम से ही दर्ज होती है। यही कारण है कि नकल नाम की बीमारी हरियाणा से बहुत हद तक खत्म हो गई है। अन्य कई बोर्ड भी अब इसका अनुकरण करने लगे हैं।

एनसीएफ का उद्देश्य वास्तव में इस बात का समर्थन करना होना चाहिए कि यह देश भर में सामंजस्य और सद्भाव को सक्षम करते हुए, गुणवत्ता और समानता के लिए एक आधार प्रदान करते हुए, देश में सभी विविध पाठ्यक्रमों को विकसित करने में मदद करने के लिए एक रूपरेखा है तथा सभी राज्य इससे स्टेट करीकुलर

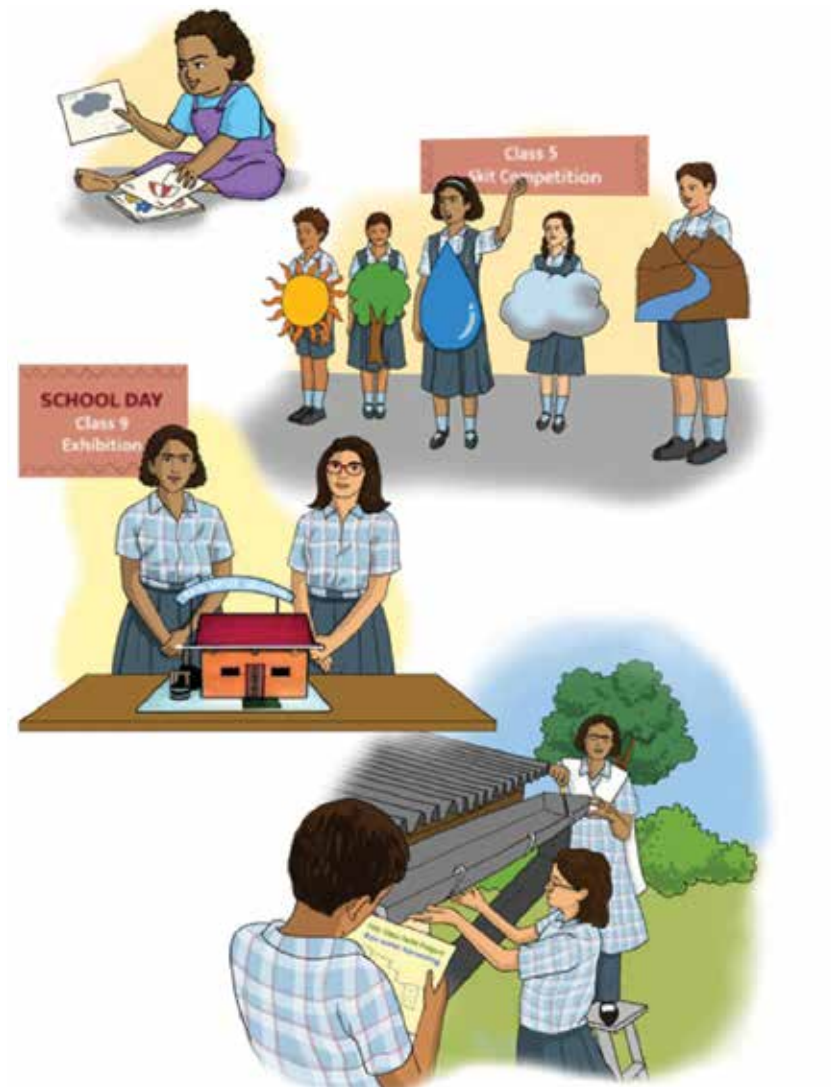

फ्रेमवर्क को बनाकर मार्गदर्शन ले सकते हैं।

इस प्रकार इस एनसीएफ का लक्ष्य पाठ्यक्रम के विकास के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों, लक्ष्यों, संरचना और तत्त्वों को प्रदान करना है जिसके द्वारा राज्यों, बोर्डों और स्कूलों में शिक्षकों सहित संबंधित पदाधिकारियों द्वारा खेल सामग्री, कार्यपुस्तिकाओं, पाठ्यपुस्तकों और मूल्यांकन विधियों सहित पाठ्यक्रम, टीएलएम विकसित किए जाएँगे।

1.1.3 एनसीएफ का लक्ष्य-

इस एनसीएफ का व्यापक लक्ष्य शिक्षाशास्त्र सहित पाठ्यक्रम में सकारात्मक बदलाव के माध्यम से देश की स्कूल शिक्षा प्रणाली को सकारात्मक रूप से बदलने में मदद करना है। विशेष रूप से इस एनसीएफ का लक्ष्य शिक्षा में चली आ रही बेमतलब की प्रथाओं को बदलने में मदद करना है। चूँकि 'पाठ्यचर्या' शब्द विद्यालय के प्रत्येक छात्र में होने वाले समग्र अनुभवों को समाहित करता है, 'अभ्यास' केवल पाठ्यचर्या सामग्री और शिक्षाशास्त्र को संदर्भित नहीं करता है बल्कि विद्यालय के वातावरण और संस्कृति भी इसमें शामिल हैं। यह पाठ्यक्रम का समग्र परिवर्तन है जो हमें विद्यार्थियों के लिए समग्र सीखने के अनुभवों को सकारात्मक रूप से बदलने में सक्षम करेगा।

1. 2 एनसीएफ डिज़ाइन के मुख्य सिद्धांत-

इस एनसीएफ ने एनईपी-2020 के दृष्टिकोण को साकार करने के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा को डिज़ाइन करने में कुछ सिद्धांतों को अपनाया है-

क. हितधारकों के लिए मार्गदर्शिका- इस एनसीएफ का उद्देश्य शिक्षा से जुड़े हितधारकों के लिए एक मूल्यवान मार्गदर्शक होना है, चाहे वे पाठ्यक्रम या सामग्री निर्माणकर्ता हों या विद्यालय शिक्षक हों। प्रयुक्त की जाने वाली भाषा और अभिव्यक्ति की शैली ऐसी है कि यह अभ्यासकर्ताओं के लिए आसानी से समझने योग्य और प्रासंगिक है।

ख.विशिष्टता- इस एनसीएफ ने विशिष्ट, गैर-बाध्यकारी सुझावों और दृष्टांतों को, जहाँ भी वे उपयोगी हो सकते हैं, शामिल किया है और अवधारणाओं और सिद्धांतों को चित्रित करने के लिए जमीनी अनुभवों से उदाहरणों का उपयोग किया है। हालांकि यह एनसीएफ इस विश्वास से निर्देशित है कि विशिष्ट होना एक गुण है जो अभ्यासकर्ताओं के लिए एक अच्छा प्रारंभिक बिन्दु प्रदान करने में मदद करता है। वे अभी भी हमेशा नवाचार कर सकते हैं, केवल एक प्रारंभिक बिंदु के रूप में प्रदान की गई विशिष्टताओं को उपयोग करके या एक विचार के रूप में संशोधित या प्रतिस्थापित किए जाने के लिए जो उनके संदर्भों और परिस्थितियों के लिए उपयुक्त है। देश की जमीनी हकीकत से संकेत मिलता है कि प्रैक्टिशनर्स को अक्सर शिक्षा पर केवल सामान्यताओं और व्यापक दूरदर्शी बयानों के साथ भ्रमित और दिशाहीन छोड़ दिया जाता है।

ग. व्यावहारिक विचार- इस एनसीएफ ने जमीनी वास्तविकताओं पर विचार किया। जैसे कि विद्यालय के दिनों के दौरान उपलब्ध समय, विद्यालय संदर्भों में उपलब्ध संसाधन और शिक्षक उपलब्धता और तैयारी। इस एनसीएफ ने सचेत रूप से आदर्शवाद और व्यावहारिकता के बीच एक उचित संतुलन बनाए रखा है जो कई मामलों में सामना की जा रही समस्याओं के अल्पकालिक और दीर्घकालिक समाधान प्रदान करता है। इस प्रकार सुझाए गए सुधार समग्र रूप से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के समीपस्थ विकास क्षेत्र (जेडपीडी) के भीतर होने की उम्मीद है।

घ. सीखने के मानक- इस एनसीएफ ने सभी हितधारकों-नीति निर्माताओं, शैक्षिक प्रशासकों और पदाधिकारियों, पाठ्यक्रम और सामग्री डेवलपर्स, माता-पिता, शिक्षकों और विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के इच्छित शैक्षिक परिणामों पर स्पष्टता लाने के लिए स्पष्ट और विशिष्ट शिक्षण मानक निर्धारित किए हैं। चूंकि विद्यालय शिक्षा एक सार्वजनिक वस्तु है, इसलिए यह आशा की जाती है कि सभी हितधारकों के बीच इस तरह की स्पष्टता समय रूप से शिक्षा प्रणाली के लिए अधिक जवाबदेही और प्रभावशीलता लाएगी।

1.3 सीखने के मानक-

शिक्षा को एक बहुत ही मौलिक अर्थ में मूल्यवान ज्ञान, क्षमताओं, मूल्यों और स्वभावों की प्राप्ति के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यदि ऐसा है तो किसी भी पाठ्यक्रम की रूपरेखा के लिए महत्त्वपूर्ण प्रश्नों में से एक यह है कि कौन-सा ज्ञान, क्षमता, मूल्य और स्वभाव मूल्यवान है? दूसरे शब्दों में, शिक्षण के लायक क्या है?

यह एनसीएफ इस प्रश्न का जवाब विशेष रूप से 'सीखने के मानकों' के एक स्पष्ट और सटीक सेट के माध्यम से देता है।

ये 'अधिगम मानक' और उनसे जुड़ी प्रक्रियाएँ, उदाहरण के लिए 'शिक्षा के लक्ष्य' से 'सीखने के प्रतिफल' तक 'फ्लो-डाउन' इस एनसीएफ के केन्द्र में हैं- पाठ्यक्रम के डिज़ाइन और अभ्यास के विभिन्न घटकों के संरेखण और एकीकरण को सुनिश्चित करने के लिए ताकि हमारी विद्यालय शिक्षा वह हासिल कर सके जो हम अपने बच्चों के लिए चाहते हैं।

विद्यालय शिक्षा के सभी हितधारकों को 'अधिगम मानकों' पर सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए।

1.3.1 विद्यालय शिक्षा के व्यापक लक्ष्य-

अधिगम मानक इस एनसीएफ में व्यक्त किए गए विद्यालय शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों पर व्यापक रूप से सहमत होने से निर्देशित होते हैं जो इस लक्ष्य एनईपी-2020 द्वारा परिकल्पित शिक्षा के दृष्टिकोण और लक्ष्य से प्राप्त किए गए हैं-

क. तर्कसंगत विचार और स्वायत्तता- स्कूलों को स्वतंत्र विचारकों को विकसित करने का लक्ष्य रखना चाहिए जो अपने आसपास की दुनिया की जमीनी समझ के आधार पर अच्छी तरह से सुविज्ञ निर्णय लेते हैं।

ख. स्वास्थ्य और कल्याण- विद्यालयी शिक्षा विद्यार्थियों के लिए एक संपूर्ण अनुभव होना चाहिए। विद्यार्थियों को ज्ञान, क्षमताएँ और ऐसा स्वभाव प्राप्त करना चाहिए जो मन-शरीर कल्याण को बढ़ावा देने वाले हैं।

ग. लोकतांत्रिक और सामुदायिक भागीदारी- लोकतंत्र केवल शासन का एक रूप नहीं है; यह सहयोगी समुदाय की भावना के साथ सम्बद्ध जीवन जीने का एक तरीका है, सहयोगी समुदाय की भावना है। विद्यालय शिक्षा का लक्ष्य ऐसे ज्ञान, क्षमताओं, मूल्यों और स्वभावों को विकसित करना होना चाहिए जो विद्यार्थियों को भारत के लोकतांत्रिक कामकाज में भाग लेने और योगदान करने में सक्षम बनायें।

घ. आर्थिक भागीदारी- विद्यालय शिक्षा का लक्ष्य ऐसे ज्ञान, क्षमताओं, मूल्यों और स्वभावों को विकसित करना होना चाहिए जो विद्यार्थियों को अर्थव्यवस्था में भाग लेने और योगदान करने में सक्षम बनाते हैं। अर्थव्यवस्था में प्रभावी भागीदारी का व्यक्ति और समग्र समाज दोनों के लिए सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ङ. सांस्कृतिक भागीदारी- परिवार और समुदाय में अंतर्निहित संस्कृति और विरासत को समझना सांस्कृतिक भागीदारी के मूल में हैं। विद्यालय शिक्षा को सांस्कृतिक साक्षरता को बढ़ावा देना चाहिए और विद्यार्थियों को सार्थक रूप से भाग लेने और संस्कृति में सकारात्मक योगदान देने के लिए ज्ञान, क्षमता, मूल्यों और स्वभाव प्राप्त करने में सक्षम बनाना चाहिए।

1.3.2 मूल्य और स्वभाव, क्षमताएँ और ज्ञान

शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को सर्वोत्तम रूप से प्राप्त किया जा सकता है-

क. भारतीय विरासत के पारंपरिक मूल्यों- नैतिक मूल्यों, लोकतांत्रिक मूल्यों और ज्ञान मीमांसीय मूल्यों सहित उचित मूल्यों का विकास करना।

ख. सकारात्मक स्वभाव प्राप्त करना- सकारात्मक कार्यनीति, जिज्ञासा और आश्चर्य, भारत में गौरव और जड़ता प्राप्त करना।

ग. क्षमताओं का विकास- जाँच, प्रभावी संचार, समस्या समाधान और तार्किक तर्क, रचनात्मकता और सौंदर्य अभिव्यक्ति, स्वास्थ्य बनाए रखने; उत्पादक कार्य और प्रभावी सामाजिक सहभागिता के लिए क्षमता विकसित करना।

घ. विस्तार और गहराई में ज्ञान प्राप्त करना- भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और कल्याण, व्यायवायिक शिक्षा के साथ पाठ्यचर्या क्षेत्र, अंतःविषय क्षेत्रों के साथ, विद्यार्थियों में बहु-विषयक और अंतःविषय ज्ञान विकसित करते हैं। इस तरह का ज्ञान विद्यार्थियों को दुनिया की एक अच्छी तरह से जमीनी समझ विकसित करने की अनुमति देता है।

ये मूल्य, क्षमताएँ और ज्ञान अक्सर एक साथ विकसित होते हैं और सामग्री, शिक्षाशास्त्र और मूल्यांकन का उद्देश्य उन्हें एक साथ सहजता से बुनना है।

1.3.3 पाठ्यचर्या के उद्देश्य, लक्ष्य, दक्षताएँ और सीखने के परिणाम-

उपरोक्त मूल्यों और स्वभावों, क्षमताओं और ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सीखने के मानकों को चार स्तरों पर व्यक्त किया गया है-

क. पाठ्यचर्या के लक्ष्य- पाठ्यचर्या के लक्ष्य प्रत्येक पाठ्यचर्या क्षेत्र में व्यक्त किए गए हैं। इन लक्ष्यों को विद्यालय शिक्षा के चार चरणों में से प्रत्येक के अंत तक प्राप्त किया जाना है। सभी आठ पाठ्यचर्या क्षेत्रों के उद्देश्यों को एक साथ रखने से विद्यालय शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों की प्राप्ति होनी चाहिए।

ख.पाठ्यचर्या के लक्ष्य- पाठ्यचर्या लक्ष्य अधिक विशिष्ट कथन है जो पाठ्यचर्या उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम विकास और कार्यान्वयन में दिशा देते हैं। वे एक विद्यालय चरण (जैसे मूलभूत चरण) और एक पाठ्यचर्या क्षेत्र (जैसे गणित) के लिए भी विशिष्ट हैं।

ग. दक्षता- दक्षताएँ विशिष्ट सीखने की उपलब्धियाँ हैं जो अवलोकन योग्य हैं और व्यवस्थित रूप से मूल्यांकित की जा सकती हैं। इस एनसीएफ में दक्षताएँ (जो केवल संकेतात्मक हैं और विभिन्न संदर्भों में भिन्न हो सकती हैं) सीधे एक पाठ्यचर्या लक्ष्य से प्राप्त होती हैं और एक चरण के अंत तक प्राप्त होने की उम्मीद की जाती है। विद्यालय शिक्षा के प्रत्येक चरण के अंत में योगात्मक मूल्यांकन इन दक्षताओं पर आधारित होना चाहिए।

घ. सीखने के परिणाम अधिगम प्रतिफल- अधिगम प्रतिफल (एलओ) सीखने के चरणबद्ध मील के पत्थर हैं। ये एलओ शिक्षकों को विशिष्ट दक्षताओं को प्राप्त करने की दिशा में उनकी सामग्री, शिक्षाशास्त्र और आकलन की योजना बनाने में सक्षम बनाते हैं। पाठ्यक्रम और सामग्री डेवलपर्स को इन एलओ को उन संदर्भों के आधार पर अनुकूलित करना होगा जिनमें वे लागू होते हैं।

इस प्रकार इस एनसीएफ में शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों से विशिष्ट एलओ तक बढ़ती विशिष्टता का स्पष्ट प्रवाह है। इन स्पष्ट संबंधों के माध्यम से सभी हितधारक विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धियों का निरीक्षण और मूल्यांकन कर सकते हैं जिससे विद्यालयी शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को पूरा किया जा सके।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय
माध्यमिक शिक्षा,
हरियाणा

राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा विकास हेतु हरियाणा द्वारा उठाए कदम

डॉ. शिवानी कौशिक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने निम्नलिखित चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) के विकास की सिफारिश की:

1. प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
2. स्कूली शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
3. शिक्षक शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
4. प्रौढ़ शिक्षा पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

एनसीएफ के विकास के लिए प्रमुख सिफारिशें:

- 5+3+3+4 पाठ्यचर्या और शैक्षणिक ढाँचा
- प्रारंभिक बचपन की देखभाल और शिक्षा
- मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
- योग्यता आधारित शिक्षा
- विषयों के चयन में कोई कठोर पृथक्करण नहीं
- पाठ्यचर्या को मुख्य अनिवार्यताओं तक कम करना
- कक्षा 3, 5 और 8 में सीखने के स्तर को बेंचमार्क करना
- व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्कल्पना
- मुख्य कौशल और सामग्री की पहचान
- बहुभाषिकता

राष्ट्रीय और राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास की प्रक्रिया:

2021 में शिक्षा मंत्रालय (एमओई) और एनसीईआरटी द्वारा तय की गई रणनीति के अनुसार, यह निर्णय लिया गया कि एनसीएफ को व्यापक परामर्श के माध्यम से देश भर से स्थानीय और स्वदेशी फ्लेवर को शामिल और एकीकृत करके तैयार किया जाना चाहिए। इस प्रयोजन के लिए, यह निर्णय लिया गया कि इन चार पाठ्यक्रमों को पहले राज्य द्वारा विकसित किया जाना चाहिए और फिर एनसीएफ की तैयारी में शामिल किया जा सकता है। फिर इन एनसीएफ को राज्यों को वापस भेजा जाएगा जो राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों में कार्यान्वयन के लिए एनसीएफ की अंतिम सिफारिशों से इनपुट को अपनाकर/अनुकूलित करके अपने राज्य पाठ्यचर्या की रूपरेखा तय करेंगे।

सत्र 2021-22 के दौरान सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा के विकास की प्रक्रिया शुरू की गई और एससीईआरटी ने अपने-अपने राज्यों में पूरी प्रक्रिया का समन्वय किया। एनसीईआरटी ने पूरी प्रक्रिया के समन्वय के लिए एक टेक-प्लेटफॉर्म (www.ncf.ncert.gov.in) विकसित किया। इस प्रक्रिया में सभी गतिविधियाँ पेपरलेस तरीके से ऑनलाइन माध्यम से सम्पन्न की गईं। इस प्रक्रिया में नीचे उल्लिखित अनुक्रम में निम्नलिखित गतिविधियाँ शामिल थीं-

- सभी चार एससीएफ पर जिला स्तरीय परामर्श बैठकें-
- एससीएफ के सभी चार विषयों पर मोबाइल ऐप सर्वेक्षण
- एनसीईआरटी द्वारा सभी राज्यों को दिए गए 25 विषयों पर स्थिति पत्रों का विकास
- चार राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखाओं का विकास

राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा के विकास के लिए हरियाणा राज्य द्वारा उठाए गए कदम:

एससीईआरटी हरियाणा को चार राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा विकसित करने का काम सौंपा गया था। एक नोडल अधिकारी और एक राज्य तकनीकी समन्वयक ने तकनीकी सहायता टीम के साथ पूरी प्रक्रिया का समन्वय किया। राज्य स्तर पर निम्नलिखित कदम उठाये गये-

1. एनसीईआरटी द्वारा राज्य तकनीकी टीम का उन्मुखीकरण:

एनसीईआरटी द्वारा 27-28 दिसंबर, 2021 को टेक-प्लेटफॉर्म पर एक ओरिएंटेशन-सह-हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। बैठक में राज्य नोडल अधिकारी, राज्य तकनीकी समन्वयक, दो जिला समन्वयक, एक प्रोग्रामर और एक डाटा एंट्री ऑपरेटर सहित राज्य तकनीकी टीम ने भाग लिया।

2. जिला नोडल अधिकारी एवं जिला समन्वयक का उन्मुखीकरणः

जिला नोडल अधिकारी (डीआईईटी प्राचार्य/डीईओ) और जिला तकनीकी समन्वयक (प्रत्येक डीआईईटी से नामित) का अभिविन्यास 11-13 जनवरी, 2022 को ऑनलाइन मोड के माध्यम से आयोजित किया गया था। परामर्श बैठक के सदस्यों को जोड़ने, बैठकें बनाने, उपस्थिति अद्यतन करने और परामर्श रिपोर्ट तैयार करने के सभी चरणों को समन्वयकों को समझाया गया। मोबाइल ऐप सर्वे की प्रक्रिया भी समझायी गयी।

3. जिला स्तरीय परामर्श बैठकें-

जिला टीमों ने जिला स्तरीय परामर्श बैठकें (कम से कम 2 प्रति एससीएफ) आयोजित कीं और एनसीईआरटी दिशानिर्देशों (टेक-प्लेटफॉर्म पर उपलब्ध) में दिए गए प्रश्नों पर चर्चा की। प्रत्येक जिले द्वारा टेक-प्लेटफ़ॉर्म पर प्रतिक्रियाएँ अपलोड की गईं। एससीएफ के सभी चार विषयों के लिए परामर्श समूहों में माता-पिता/अभिभावक, छात्र (स्कूल/उच्च शिक्षा संस्थानों से), विषय विशेषज्ञ, विद्वान, स्थानीय समुदाय के सदस्य, पदाधिकारी, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, गैर-साक्षर, नव-साक्षर आदि शामिल थे। चार एससीएफ से संबंधित 4 डीएलसी रिपोर्ट प्रस्तुत की गईं, जिससे हरियाणा राज्य से कुल 88 रिपोर्ट प्राप्त हुईं।

4. मोबाइल ऐप सर्वेक्षण

यह सर्वेक्षण एससीईआरटी द्वारा टेक-प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत सर्वेक्षणकर्ताओं द्वारा एनसीएफ सर्वे नामक मोबाइल ऐप का उपयोग करके आयोजित किया गया था। प्रति जिले 15 सर्वेक्षकों का चयन किया गया और टेक-प्लेटफॉर्म पर पंजीकृत किया गया। प्रत्येक सर्वेक्षणकर्ता कम से कम 10 उत्तरदाताओं तक पहुँचा। उत्तरदाताओं में माता-पिता/अभिभावक, छात्र (स्कूल/उच्च शिक्षा संस्थानों से), विषय विशेषज्ञ, विद्वान, स्थानीय समुदाय के सदस्य, पदाधिकारी, आँगनवाड़ी कार्यकर्ता, गैर-साक्षर, नव-साक्षर आदि शामिल थे। सभी जिला समन्वयकों ने 20-22 जनवरी, 2022 तक सर्वेक्षक प्रशिक्षण आयोजित किया। फरवरी, 2022 के दौरान हरियाणा के सभी जिलों में मोबाइल ऐप सर्वेक्षण आयोजित किया गया और पोर्टल पर 4053 प्रतिक्रियाएँ सब्मिट की गईं।

5. 25 स्थिति पत्रों (Position Papers) का विकासः

राज्य ने 25 फोकस समूहों का गठन किया है और स्थिति पत्र विकसित किए हैं जिन्हें टेक-प्लेटफॉर्म पर अपलोड किया गया है। इसमें शामिल 25 विषय निम्नलिखित थे-

1. शिक्षा दर्शन
2. प्री-स्कूल शिक्षा और मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
3. पाठ्यचर्या और शिक्षाशास्त्र
4. सामाजिक विज्ञान में शिक्षा
5. व्यावसायिक शिक्षा
6. कला शिक्षा
7. विज्ञान शिक्षा
8. गणित शिक्षा और कम्प्यूटेशनल सोच
9. भाषा शिक्षा
10. पर्यावरण शिक्षा
11. स्वास्थ्य और खुशहाली
12. परीक्षा में सुधार एवं समग्र प्रगति कार्ड

क्रॉस कटिंग थीम (5)

1. भारत का ज्ञान
2. मूल्य शिक्षा
3. समावेशी शिक्षा
4. लिंग शिक्षा
5. स्कूली शिक्षा के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी

एनईपी, 2020 के अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र (8)

1. शिक्षक शिक्षा
2. स्कूलों के लिए मार्गदर्शन और परामर्श
3. स्कूल प्रशासन और नेतृत्व
4. गुणवत्तापूर्ण पाठ्य और गैर-पाठ्य सामग्री का प्रकाशनः मुद्दे, चुनौतियाँ और आगे की राह
5. स्कूली शिक्षा और उच्च शिक्षा के बीच संबंध
6. स्कूली शिक्षा के लिए वैकल्पिक तरीके
7. शिक्षा में समुदाय की उभरती भूमिका
8. प्रौढ़ शिक्षा

प्रत्येक स्थिति पत्र के साथ एक डाइट संबद्ध था। प्रत्येक डाइट ने पेपर विकसित करने के लिए 10-12 सदस्यों की एक समिति का गठन किया। प्रत्येक टीम ने स्थिति पत्र की चर्चा, विकास और समीक्षा के लिए कम से कम 2-3 बैठकें आयोजित कीं। विभिन्न विश्वविद्यालयों और राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संस्थानों के प्रख्यात शिक्षाविदों को इन 25 पत्रों के अध्यक्ष के रूप में नियुक्त किया गया था। एससीएफ के विकास से संबंधित कार्यों को पूरा करने के लिए 14 मार्च, 2022 को एससीईआरटी हरियाणा में एक समीक्षा बैठक आयोजित की गई और सभी जिला टीमों के प्रयासों की सराहना की गई।

इसके बाद राज्य संचालन समितियों ने एनसीएफ टेक-प्लेटफॉर्म पर अपने चार एससीएफ प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित करने के लिए एनसीईआरटी द्वारा सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के स्थिति पत्रों और एससीएफ (एनसीएफ टेक-प्लेटफॉर्म पर प्रस्तुत) से इनपुट लिया गया था। एनसीएफ फाउंडेशनल स्टेज और एनसीएफ स्कूल शिक्षा को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति द्वारा अंतिम रूप दिया गया था और क्रमशः अक्टूबर 2022 और जुलाई 2023 में जारी किया गया था।

विषय विशेषज्ञ, रीप सेल, एससीईआरटी हरियाणा
(राज्य तकनीकी समन्वयक - एससीएफ)

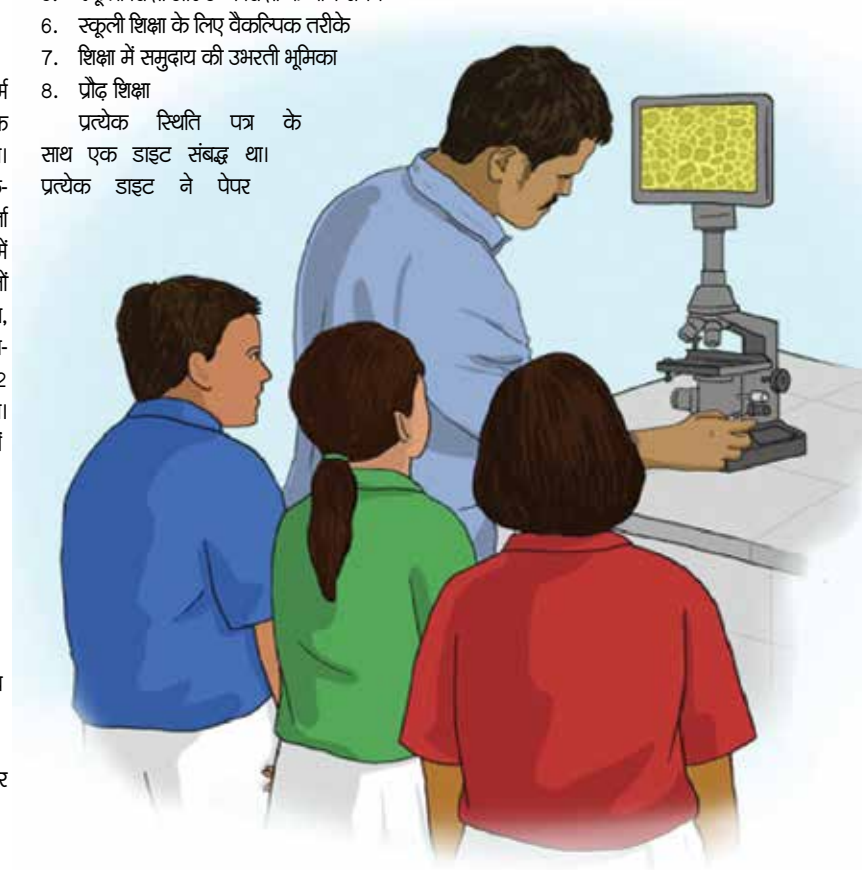

शिक्षण में पुतली का प्रयोग

दर्शना देवी

हर शिक्षक चाहता है कि उसकी कक्षा का हर बच्चा सीख जाए, बच्चे रुचि लेकर सीखें, बच्चों को विद्यालय आना अच्छा लगे, हर बच्चा सीखने की प्रक्रिया में भाग ले आदि। और ये सब करने के लिए शिक्षक को प्रयासरत रहना होगा। शिक्षण की परंपरागत शिक्षण विधियों को छोड़ कुछ ऐसा करना होगा कि कक्षा के अंतिम बैंच पर बैठा बच्चा भी भाग ले। कक्षा-कक्ष का वातावरण इतना सहज और मैत्रीपूर्ण हो कि हर बच्चा रुचि, सरसता, आनंद से सीखकर अपने ज्ञान को स्थायी कर ले।

इन सब के लिए शिक्षक चित्र, चार्ट, खिलौने, किट, खेल विधि आदि का प्रयोग कर सकते हैं और करते भी है। इसी कड़ी में कठपुतली या पुतली कला का प्रयोग सहायक सामग्री के रूप में किया जाये तो बहुत प्रभावशाली होगा। पुतली कला एक गतिशील कला शैली है जो सभी आयु वर्गों के लिए उपयुक्त है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में पुतली कला के प्रयोग से बच्चों में कल्पना शक्ति, रचनात्मकता, एकाग्रता, सृजनात्मकता, अवलोकन आदि कुशलताओं को विकसित किया जा सकता है। कठपुतली बच्चे की कल्पना के द्वार खोल देती है। इसका प्रयोग इतना प्रभावशाली होता है कि हर बच्चा शिक्षण प्रक्रिया में भाग लेता है। वह कठपुतली के साथ नाचता है, बात करता है, गाता है, पढ़ता है, लिखता

है, हँसता है, रोता है और खेलता है, क्रोधित होता है और इस प्रकार कठपुतलियों के साथ कक्षा जीवंत हो उठती है। कक्षा-कक्ष का हर वह बच्चा जो भाग लेने में संकोच करता है वह भी रुचि लेता है और खेल-खेल में कठपुतली नाटक, कठपुतली कविता, कहानी, संवाद के माध्यम से कब सीख गया, पता ही नहीं चलता। इन सभी क्रियाओं के द्वारा बच्चे की भावनाओं को उड़ान मिलती है।

कठपुतली का इतिहास-

कठपुतली विश्व के प्राचीनतम रंगमंच पर खेली जाने वाली मनोरंजक कार्यक्रमों में से एक है। प्राचीन काल में इसे कठपुतली इसलिए कहा जाता था क्योंकि ये लकड़ी अर्थात काष्ठ से बनी होती थी। लकड़ी की बनी होने के कारण यह थोड़ी भारी होती थी, जिसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाना कठिन था। आजकल कठपुतली की जगह पुतली शब्द का प्रयोग किया जाता है क्योंकि ज्यादातर पुतली काष्ठ की नहीं बनाई जाती।

पुतली का इतिहास लगभग 2500 साल पुराना है। पाणिनि के नट सूत्र में कठपुतली कला का उल्लेख मिलता है। भारत से कठपुतली, थाईलैंड, इंडोनेशिया, श्रीलंका, फिलीपींस, वियतनाम, कोरिया आदि देशों में पहुँची। ऐसा माना जाता है कि कठपुतली कला का विकास ग्रीस में हुआ। मिस्र में भी यह कला पौराणिक युग में विकसित हुई। कठपुतली ग्रामीण संस्कृति में मनोरंजन का एक बहुत पुराना और महत्त्वपूर्ण रूप था। जहाँ तक भारत की बात है तो हमें अपनी लोक-कथाओं को जीवित रखने के लिए कठपुतली कलाकारों को धन्यवाद करना चाहिए।

भारत में राजस्थान राज्य को कठपुतली कला का जन्म स्थान माना जाता है। यह एक ऐसी कला है जिसमें विभिन्न कलाओं का संगम देखने को मिलता है। जैसे-नाटक, चित्रकला, मूर्तिकला, लकड़ी का काम, सजावट, संगीत और नृत्य आदि। इन सभी कलाओं का संगम राजस्थान की भूमि पर जीवंत रूप में महसूस किया जा सकता है। राजस्थान के अलावा ओडिशा, महाराष्ट्र, गुजरात, केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु आदि राज्यों में भी कठपुतली की कला को देखा जा सकता है।

वर्ष 2003 से 21 मार्च को पूरी दुनिया में विश्व कठपुतली दिवस के रूप में मनाया जाता है। यद्यपि कठपुतली कला भारत से दुनिया के कई देशों तक पहुँची है, लेकिन आज भारत में ही इसका बहुत कम चलन है। आजकल सोशल मीडिया, इंटरनेट ने इन चीज़ों को धूमिल कर दिया है। इसलिए हमारी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूकता ज़रूरी है। शिक्षा में कठपुतली का प्रयोग करके जहाँ हम शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बना सकते हैं वहीं साथ-साथ हम अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भी संजो सकते हैं।

कठपुतली के प्रकार-

1. धागा पुतली
2. छाया पुतली
3. दस्ताना पुतली
4. उँगली पुतली
5. छड़ पुतली

राजकीय मॉडल संस्कृति प्राथमिक पाठशाला, आशियाना, पंचकूला में कार्यरत प्राथमिक अध्यापिका श्रीमती अलका यादव शिक्षा के क्षेत्र में दस्ताना पुतली कला का प्रयोग करके बेहतरीन कार्य कर रही हैं। उनका भी यही मानना है कि पुतली कला के सहयोग से बच्चे बड़े रुचिकर तरीके से सीखते हैं और हर बच्चा शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बन जाता है। कक्षा का वातावरण भयमुक्त हो जाता है।

सिद्धेश्वर पांडुरंग इंगोले शिवछत्रपति विद्यालय, परली वैजनाथ, जिला बीड, महाराष्ट्र में अध्यापक हैं। वे पुतली कला के माध्यम से शिक्षण को रोचक बनाते हैं। वे मराठी विषय का अध्यापन करते हुए पाठ को एक नाटिका में रूपांतरित करते हैं। उसमें जो भाव है वह विद्यार्थियों तक पहुँचाते हैं। पात्र के अनुसार कागज और अन्य सामग्री से पुतली बनाते है। उनके कुछ विद्यार्थी भी पुतली चलाना सीख गए हैं। इस प्रकार विद्यार्थी पाठ अच्छी तरह से समझते हैं और इसके साथ उनकी नाट्य कला को भी बढ़ावा मिलता है। बच्चों की रुचि देखते ही बनती है।

गतवर्ष, जून महीने में मुझे सीसीआरटी की वर्कशॉप में भाग लेने का सौभाग्य मिला। ये वर्कशॉप शिक्षा में पुतली कला शीर्षक से थी। जब हमें इस कला से रूबरू करवाया गया तो वो अनुभव कल्पना से परे था। राजस्थान की धरा पर वहाँ के पुतली कलाकारों द्वारा राजस्थान की संस्कृति का जो जीवंत वर्णन किया गया, वो वास्तव में रोमांच से भर देने वाला था। जो अनुभव मैंने वहाँ से लिया, उसका प्रयोग मैंने अपनी कक्षा में किया। वास्तव में पुतली कला का प्रयोग सभी आयु वर्ग के लिए प्रभावशाली है। पुतली के प्रयोग से जब कक्षा कक्ष में कोई भी दक्षता या पाठ करवाया जाता है तो हर बच्चा बड़ी रुचि से सुनता है और हर बच्चे की समझ बनती है। कक्षा का वातावरण बड़ा ही आनंददायक होता है। मेरी कक्षा का वह बच्चा जो कोई रुचि नहीं लेता था, ज्यादातर अनुपस्थित रहता था, पुतली के माध्यम से वह भी अपनी बात बोलता है, प्रश्न पूछता है और उपस्थित रहता है। सभी बच्चे सहज और मैत्रीपूर्ण महसूस करते हैं, पुतली कला के माध्यम से उनकी समझ स्थायी हो जाती है। बच्चों को इंतजार रहता है कि आज मैम क्या करवाने वाली हैं। मेरी कक्षा को ही नहीं, पूरे विद्यालय के बच्चों को शनिवार का इंतज़ार रहता है कि आज जॉएफुल सैटरडे में हमें पुतली कला के माध्यम से कुछ अलग और मज़ेदार सीखने को मिलेगा। बच्चे खेल ही खेल में कठिन से कठिन दक्षता आसानी से आत्मसात कर लेते हैं। पुतली के प्रयोग से कक्षा-कक्ष का वातावरण जीवंत हो उठता है और हर बच्चा सीखने को उत्सुक और रोमांचित हो उठता है।

निष्कर्षतः अगर शिक्षक अपनी शिक्षण-प्रक्रिया में पुतली कला रूपी सहायक सामग्री को शामिल कर लें तो कक्षा-कक्ष के वातावरण और बच्चों के व्यवहार में बदलाव कमाल का होगा। बच्चों की रुचि, खुशी, उत्सुकता, उमंग, शिक्षक को भी प्रतिदिन नए-नए पुतली नाटक, कहानी, संवाद, कविता, लाने पर प्रेरित ही नहीं मज़बूर कर देंगे। जब बच्चों की समझ बड़ी सहजता से बनती है तो अध्यापक भी प्रेरित होते हैं। इस प्रकार पुतली कला के प्रयोग से बच्चे रुचि तो लेंगे ही साथ ही साथ दक्षता भी स्थायी हो जाएगी। बच्चों के साथ-साथ शिक्षक को भी शिक्षण में मज़ा आएगा।

राजकीय प्राथमिक पाठशाला
ढाणा खुर्द, हाँसी-1, हिसार

दिव्यांगजन के अधिकार और सरकारी योजनाएँ

डॉ. राजीव वत्स

अपने रोज़मर्रा के कार्यों में व्यस्त आपने कभी सोचा है कि कोई दिव्यांग व्यक्ति कैसे अपनी पहियेदार कुर्सी के सहारे सरकारी इमारतों की सीढ़ियाँ चढ़ पाएगा ? सार्वजनिक परिवहन के साधनों का बिना किसी सहायता के कैसे इस्तेमाल कर पाएगा ?

वर्ष 2011 की जनगणना के मुताबिक भारत की कुल जनसंख्या में 2.21 प्रतिशत की हिस्सेदारी रखने वाले दिव्यांगजन की समाज में संपूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करने पर बल देने वाले कानूनों की उपस्थिति के बावजूद इस ओर कम ही ध्यान दिया गया है। लेकिन, हाल ही में सुप्रीम कोर्ट ने निर्धारित समय-सीमा के अंदर दिव्यांगजन की सार्वजनिक सुविधाओं तक पूर्ण पहुँच सुनिश्चित करने के लिये केंद्र और राज्य सरकारों को निर्देश जारी किये हैं। दरअसल, पिछले कुछ दिनों में सुप्रीम कोर्ट ने समय-समय पर विभिन्न दिशा-निर्देश दिये हैं, ताकि सार्वजनिक अवसंरचना तक दिव्यांगजनों की सुलभ पहुँच सुनिश्चित की जा सके।

विदित हो कि सरकार द्वारा दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 (Rights of Persons with Disabilities Act, 2016) पारित किया जा चुका है ऐसे में सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों का पालन अपरिहार्य हो जाता है। इस लेख में हम दिव्यांगजनों के कल्याण हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही कुछ प्रमुख योजनाओं के संबंध में चर्चा करेंगे-

क्या है दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016

दिव्यांगजन अधिकार विधेयक, वर्ष 2016 के अंत में राज्यसभा द्वारा पारित होते ही दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 बन गया, जो वर्ष 1995 के दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम को निरस्त करता है।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 की विशेषताएँ-

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 में दिव्यांगता की परिभाषा में बदलाव लाते हुए इसे और भी व्यापक बनाया गया है।

दरअसल, इस अधिनियम में दिव्यांगता को एक विकसित और गतिशील अवधारणा के आधार पर परिभाषित किया गया है और दिव्यांगता के मौजूदा प्रकारों को 7 से बढ़ाकर 21 कर दिया गया है। साथ ही केंद्र सरकार को इन प्रकारों में वृद्धि की शक्ति भी दी गई है। गौरतलब है कि शिक्षा और सरकारी नौकरियों में दिव्यांग व्यक्तियों को अब तक 3% आरक्षण दिये जाने की व्यवस्था की गई थी, लेकिन इस अधिनियम में इसे बढ़ाकर 4% कर दिया गया है। इस अधिनियम में बेंचमार्क दिव्यांगता (bench-mark-disability) से पीड़ित 6 से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिये निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की गई है। साथ ही सरकारी वित्तपोषित शैक्षिक संस्थानों और सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संस्थानों को दिव्यांग बच्चों को समावेशी शिक्षा प्रदान करनी होगी। दिव्यांगजन को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिये 'राष्ट्रीय और राज्यनिधि' का निर्माण किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि इस संबंध में बनाई गई अन्य निधियों का इस नई निधि में विलय कर दिया जाएगा। सुलभ भारत अभियान को मज़बूती प्रदान करने एवं निर्धारित समय-सीमा में सार्वजनिक इमारतों (सरकारी और निजी दोनों) में दिव्यांगजन की पहुँच सुनिश्चित करने पर बल दिया गया है। यह विधेयक ज़िला न्यायालय द्वारा अभिभावकता की व्यवस्था प्रदान करता है जिसके तहत अभिभावक और दिव्यांगों के बीच संयुक्त निर्णय लेने की व्यवस्था होगी। गौरतलब है कि इस अधिनियम में बेंचमार्क दिव्यांगता यानी न्यूनतम 40 प्रतिशत दिव्यांगता के शिकार लोगों को शिक्षा और रोज़गार में आरक्षण का लाभ देने का भी प्रावधान है और ऐसे लोगों को सरकारी योजनाओं और अन्य प्रकार की योजनाओं में भी प्राथमिकता दी जाएगी।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्रावधानः

दिव्यांगजनों के अधिकारों के उल्लंघन से संबंधित मामलों के निपटारे के लिये प्रत्येक ज़िले में विशेष न्यायालयों को नामित किया जाएगा। नया अधिनियम इस संबंध में भारत में बनने वाले कानूनों को दिव्यांग व्यक्तियों पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन (यूएनसीआरपीडी) के उद्देश्यों के सापेक्ष ला खड़ा करेगा। भारत यूएनसीआरपीडी का एक हस्ताक्षरकर्ता देश है और यह अधिनियम यूएनसीआरपीडी के संदर्भ में भारत के दायित्वों को पूरा करेगा।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के संबंध में भारत सरकार के प्रयास-

सुगम्य भारत अभियानः दिव्यांगजन को सशक्त बनाने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा 15 दिसंबर, 2015

को सुगम्य भारत अभियान का शुभारंभ किया गया।

इस अभियान का उद्देश्य दिव्यांगजन के लिये एक सक्षम और बाधारहित वातावरण सुनिश्चित करना है। इस अभियान के तहत तीन प्रमुख उद्देश्यों- विद्यमान वातावरण में सुगम्यता सुनिश्चित करना, परिवहन प्रणाली में सुगम्यता तथा ज्ञान एवं आईसीटी के माध्यम से दिव्यांगों को सशक्त बनाना शामिल हैं।

सुगम्य पुस्तकालयः सरकार द्वारा वर्ष 2016 में एक ऑनलाइन मंच सुगम्य पुस्तकालय की शुरुआत की गई है, जहाँ दिव्यांगजन इंटरनेट के माध्यम से पुस्तकालय से संबद्ध सभी प्रकार की उपयोगी पुस्तकों को पढ़ सकते हैं। नेत्रहीन व्यक्तियों के लिये अलग से व्यवस्था की गई है। सुगम्य पुस्तकालय में नेत्रहीन व्यक्ति भी अपनी पसंद के किसी भी उपकरण जैसे- मोबाइल फोन, टैबलेट, कंप्यूटर इत्यादि का उपयोग कर ब्रेल-डिस्प्ले की मदद से पढ़ सकते हैं।

यूडीआईडी कार्डः भारत-सरकार द्वारा वेब आधारित असाधारण दिव्यांग पहचान (यूडीआईडी) कार्ड शुरू किया गया है। इस पहल से दिव्यांग प्रमाण-पत्र की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी तथा अलग-अलग कार्यों के लिये कई प्रमाण-पत्र साथ रखने की परेशानी भी दूर होगी। इसके तहत विकलांगता के प्रकार सहित विभिन्न विवरण ऑनलाइन उपलब्ध कराए जाएँगे।

स्वावलंबन योजनाः दिव्यांग व्यक्तियों के कौशल प्रशिक्षण के लिये एक राष्ट्रीय कार्य योजना की शुरुआत की गई है। उल्लेखनीय है कि दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग द्वारा पाँच लाख दिव्यांग व्यक्तियों को कौशल प्रशिक्षण देने का महत्त्वाकांक्षी लक्ष्य तय किया गया है। इस कार्य योजना का उद्देश्य वर्ष 2022 के अंत तक 25 लाख दिव्यांगजन को कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना है।

दिव्यांगता निश्चित रूप से एक ऐसी विवशता है जिसमें दिव्यांग व्यक्ति का कोई दोष नहीं है, किन्तु दिव्यांगता के बाद भी मनुष्य इस पर विजय पा सकता है। यदि उसमें मनोबल हो और उसे समाज एवं शासन से सशक्तीकरण एवं प्रोत्साहन प्राप्त होता रहे। इस कथन को सिद्ध करने हेतु प्रदेश सरकार कृत संकल्प है।

दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 के संबंध में हरियाणा सरकार के प्रयास-

हरियाणा सरकार ने राज्य में दिव्यांगजन अधिकार अधिनियम, 2016 को लागू करने के लिए नियमों को अधिसूचित कर दिया है। ये नियम दिव्यांग व्यक्तियों की पहचान, प्रमाणन, पंजीकरण, शिक्षा, रोज़गार, सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, पहुँच और शिकायत निवारण के लिए दिशा निर्देश प्रदान करते हैं।

दिव्यांगों के लिए राज्य आयुक्तः हरियाणा सरकार ने दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिनियम, 2016 की धारा 79 के अनुसार दिव्यांगों के लिए एक राज्य आयुक्त नियुक्त किया है। राज्य आयुक्त एक वैधानिक निकाय है जो राज्य में अधिनियम के क्रियान्वयन की निगरानी करता है और

दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक सिविल कोर्ट और एक आपराधिक अदालत की शक्तियों का उपयोग कर सकता है।

दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कल्याणकारी योजनाएँ- हरियाणा सरकार ने दिव्यांग व्यक्तियों के लिए कई कल्याणकारी योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे दिव्यांग पेंशन योजना, एसिड अटैक पीड़ित मुआवजा योजना, आयुष्मान भारत हरियाणा योजना, पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना, मेरिट कम मीन्स योजना आदि। ये योजनाएँ दिव्यांग व्यक्तियों को वित्तीय सहायता, स्वास्थ्य बीमा, छात्रवृत्ति और अन्य लाभ प्रदान करती हैं जो दिव्यांगजन अधिनियम, 2016 के तहत पात्र हैं।

सरकारी सेवा में दिव्यांग व्यक्तियों के आरक्षण की व्यवस्था- राज्य सरकार द्वारा सरकारी सेवा में दिव्यांग व्यक्तियों को 3 प्रतिशत का आरक्षण या जो कि वर्तमान समय में 4 प्रतिशत आरक्षण बढ़ाया गया है।

राज्य परिवहन बस में दिव्यांगों को यात्रा किराये में अनुदान- इस योजना के अन्तर्गत दिव्यांग व्यक्तियों को राज्य परिवहन की बसों में यात्रा किराये में अनुदान का प्रावधान है।

दिव्यांग कर्मचारियों एवं उनके सेवा योजकों को राज्य स्तरीय पुरस्कार- राज्य-सरकार द्वारा दिव्यांग कर्मचारियों एवं उनके उत्कृष्ट कार्य करने वाले सेवायोजकों, प्लेसमेन्ट अधिकारियों को पुरस्कृत किया जाता है।

दिव्यांगों को कृत्रिम अंग /श्रवण यंत्र क्रय करने हेतु अनुदान- इस योजना के अन्तर्गत दिव्यांग व्यक्ति को ट्राईसाइकिल, बैशाखी एवं अन्य उपकरण यंत्र को क्रय करने के लिए सरकार द्वारा अनुदान प्रदान किया जाता है।

स्वैच्छिक सस्थाओं को अनुदान- इस योजनाओं के अन्तर्गत व्यक्तियों के कल्याण के क्षेत्र में कार्य करने वाली स्वैच्छिक संस्थाओं को प्रोत्साहित करने हेतु राज्य सरकार द्वारा अनुदान देकर प्रोत्साहित किया जाता है। निःशक्त जन अधिनियम 2016 के प्रावधानों के अनुसार इन स्वैच्छिक संस्थाओं का प्रावधान है।

नए अधिनियम में मानसिक रूप से दिव्यांग, दिव्यांग महिलाएँ तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले दिव्यांगजन की अन्य चिंताओं के साथ-साथ रोज़गार चिंताओं का भी संज्ञान लिया गया है, फिर भी सुधार तभी संभव है जब प्रावधानों का समुचित अनुपालन हो। दिव्यांगजन की सहायता और सहायक उपकरणों के संबंध में अनुसंधान और विकास को भी आगे बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि विभिन्न सुविधाओं तक उनकी पहुँच को आसान बनाया जा सके। यदि शिक्षा के अधिकार को अक्षरक्षः कार्यान्वित किया जाए तो दिव्यांग बच्चों के स्कूल न जाने की स्थिति बदल सकती है, जबकि नया अधिनियम भी शिक्षा संबंधी सुधारों की बात करता है। साथ ही स्मार्ट सिटी और शहरी सुविधाओं की बेहतरी पर ज़ोर देते हुए दिव्यांगजन की चिंताओं को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जानी चाहिये। रेलवे को सभी स्टेशनों को दिव्यांगजन सुगम बनाने के लिये एक कार्यक्रम तत्काल शुरू करना चाहिये और 'पोर्टेबल स्टेप सीढ़ी' जैसे उपायों को आज़माना चाहिये।

सहायक निदेशक (शैक्षणिक)
माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, पंचकूला, हरियाणा

राज्य स्तरीय लोक कला और सांस्कृतिक समागम

सुरेश राणा

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ अपनी महती भूमिका अदा करती हैं। ये क्रियाएँ और शैक्षिक गतिविधियाँ एक दूसरे की पूरक हैं। इन गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा को तराशने का भरपूर अवसर मिलता है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने आप में विशिष्ट होता है। कोई पढ़ने में अधिक रुचि लेता है, किसी को खेलना बहुत पसंद है तो कोई पेंटिंग, साहित्यिक गतिविधियों, नृत्य कला, गायन-वादन व अन्य क्षेत्रों में प्रतिभावान हो सकता है। अतः रुचि और क्षमता के आधार पर उन्हें व्यक्तित्व विकास के समान अवसर उपलब्ध करवाए जाने चाहिए तथा उनकी प्रतिभा को पहचान कर उन्हें तराशने के भरपूर प्रयास करने चाहिए। विद्यार्थियों को केवल किताबी ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि उनका सर्वांगीण विकास करना ही शिक्षा का लक्ष्य है। अन्य गतिविधियाँ भी हमारे लिए उतनी ही आवश्यक हैं जितना की शैक्षिक ज्ञान।

विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा विद्यार्थियों को गुणवत्तापरक शिक्षा देने तथा उनके सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर प्रयासरत है। इसके लिए समय-समय पर खेल प्रतियोगिताओं, एडवेंचर कैम्प, स्काउट गतिविधियाँ, कला उत्सव, कल्चरल फेस्ट, बालरंग, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन करता है, जिनमें विद्यार्थी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। इन पाठ्य सहगामी गतिविधियों के अंतर्गत कल्चरल फेस्ट यानी सांस्कृतिक उत्सव सबके आकर्षण का केंद्र रहता है। जिसके माध्यम से विद्यार्थी हरियाणवी लोक संस्कृति से रु-ब-रु होते हैं। इस प्रतियोगिता में रागनी, एकल लोक नृत्य, समूह लोकनृत्य तथा स्किट विधा शामिल की जाती हैं।

हमारी लोक सांस्कृतिक विरासत का सरंक्षण तथा उसका संवर्धन करके अगली पीढ़ी तक हस्तांतरित करने के लिए विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा निरन्तर प्रयासरत है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु स्कूली छात्र-छात्राओं लिए 2017-18 में शुरुआत की गई कल्चरल फेस्ट की। जिसके माध्यम से सरकारी, आरोही व कस्तूरबा गाँधी विद्यालय के विद्यार्थियों के लिए अपनी कला और प्रतिभा का प्रदर्शन करने हेतु एक बहुत बड़ा मंच उपलब्ध करवाया गया है। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों के दो समूह बनाए गए हैं। कनिष्ठ समूह जिसमें कक्षा पाँचवीं से आठवीं के विद्यार्थी तथा वरिष्ठ समूह में नौंवीं से बारहवीं के विद्यार्थी भाग लेते हैं। इसमें खण्ड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक लोक नृत्य, लोक गीत तथा स्किट प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

धर्मनगरी में बिखेरी लोक संस्कृति की छटा-

तीन दिवसीय लोक कला और संस्कृति समागम का आयोजन हुआ धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र के राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में। इस महाकुंभ में हरियाणा प्रदेश के 22 जिलों के लगभग 2000 विद्यार्थियों

में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन केशव सभागार में किया। यह सांस्कृतिक उत्सव वास्तव में हरियाणवी संस्कृति का एक समागम प्रतीत हुआ, जिसमें चारों ओर हरियाणवी लोक संस्कृति की छटा बिखरी हुई दिखाई दी। लोक परिधान में सजे-धजे छात्र-छात्राएँ दमकते और महकते नज़र आए। सिर पर सजी हुई रंग-बिरंगी पगड़ी, धोती-कुर्ता, घाघरा, बहुरंगी सितारे जड़ित चूंदड़, कंठी, गल्सरी, झालरा, बोरला, पाजेब, तागड़ी आदि लोक परिधान और आभूषण जो प्रायः पाश्चात्य संस्कृति की आँधी में ओझल हो गए हैं, इस सांस्कृतिक उत्सव में दिखाई पड़े। ढ़ोल-नगाड़े, मंजीरे, खड़ताल, बैंजो, सारंगी, डमरू, चिमटा, बीन, तुम्बा आदि वाद्य यंत्र की मधुर धुन और राग- रागनियों की स्वर लहरियों ने सबको मंत्र-मुग्ध कर दिया। ढोलक की थाप, घुँघरुओं की रुनझुन-रुनझुन, राग-रागनियों की स्वर लहरियाँ और हरियाणवी धुनों और गीतों पर थिरकते छोटे-छोटे बच्चे समा बाँधते हुए नज़र आए।

हरियाणा के अपने लोक नृत्य हैं जिनमें धमाल, घूमर, झूमर, खोड़िया, रासलीला, गुग्गा डांस, छटी नृत्य, तीज नृत्य, चौपाया नृत्य और लूर नृत्य आदि शामिल हैं जो हरियाणा के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रचलित हैं। कल्चरल फेस्ट में लोक नृत्य विधा प्रतियोगिता में एकल नृत्य और समूह लोक नृत्य शामिल किए गए हैं। घूमर-धमाल आदि लोक नृत्यों पर छात्र-छात्राएँ जोश से लबरेज होकर लयबद्ध तरीके से थिरके तो दर्शकों उनकी प्रतिभा देखकर दाँतों तले उँगली दबाते प्रतीत हुए। इस सांस्कृतिक महोत्सव में ठेठ हरियाणवी गीत- मेरा चूंदड़ मँगादे हो, ओ! नणदी के बीरा, पहलम तो पीया दामण सीमा दे फेर जाइये पलटन में, दिल्ली शहर में बिके चुनरिया, मेरा नो दांडी का बिजणा; मेरे ससुर जी न दिया घड़वा, मेरे सिर बंटा टोकनी, ससुरा जी ल्या दे ऊँटनी मने धार काढणी आवे सै आदि की गूँज सुनाई दी। जिन पर हर कोई झूमकर नाचने को मज़बूर हुआ। लोक गायन विधा में रागनी की शानदार प्रस्तुति हुई। ऐसा प्रतीत हो रहा था ज्यों मँझे हुए कलाकार रागनी गा रहे हों। स्किट अर्थात लघु नाटिका प्रतियोगिता के माध्यम से मनोरंजन के साथ-साथ हरियाणवी बोली में सामाजिक कुरीतियों और समस्याओं जैसे- बेटी बचाव-बेटी पढ़ाओ, नशाखोरी, भ्रष्टाचार, दहेजप्रथा, जाति प्रथा, आदि पर कटाक्ष कर उन्हें समूल उखाड़ने का संदेश दिया गया।

विद्यालय प्रांगण बना आकर्षण केंद्र-

विद्यालय के प्रांगण को हरियाणवी संस्कृति के ढाँचे में ढाला गया गया था। म्हारा हरियाणा- जित दूध दही का खाणा कला एवं संस्कृति की महान विरासत को समेटे हुए हैं। यहाँ के तीज-त्यौहार निराले हैं, वहीं यहाँ की कला और एवं संस्कृति अपने आप में अनूठी है। परम्पराएँ हमारे जीवन का आधार हैं तो हमारे संस्कार हमारी पहचान।

ज्यों ही आप उत्सव स्थल में प्रवेश करते हैं तो आपको हरियाणवी परिधान में बालक बालिकाएँ स्वागत

द्वार पर देशी ठाठ अंदाज में आतिथ्य-सत्कार करते हुए नज़र आए। विभिन्न स्टालों पर हरियाणा की लोक संस्कृति की छटा बिखरी पड़ी थी। हमारी धरोहर में चाकी, चूल्हे, हारे, बिलोनी, बुग्गी, ओखल-मूसल, पशुधन आदि को देखकर आगन्तुक अनायास ही रोमांचित होकर खुद को जमीन से जुड़ा महसूस कर रहे थे। हमारे त्यौहारों में देव उठनी एकादशी, दशहरा, तीज, अहोई माता, साँझी आदि को दर्शाया गया था। हमारे खिलाड़ी - हमारा गौरव, सरस्वती सभ्यता तथा गीता उपदेश के स्टाल भी आकर्षण का केंद्र बने रहे।

हिंदी प्राध्यापक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
मुर्तजापुर, खंड- पिहोवा, जिला- कुरुक्षेत्र, हरियाणा

क्यों ज़रूरी हैं कल्चरल फेस्ट-

हरियाणा की लोक कथाओं, राग-रागनियों, लोक नृत्यों और सांगों में यहाँ की गौरवशाली परम्पराओं का वर्णन मिलता है। हमारी लोक कला केवल मनोरंजन प्रधान नहीं है, बल्कि प्रेरणादायक भी है। इसमें सादगी, मेलजोल, भाईचारा, सरलता, साहस, मेहनत और कर्मशीलता आदि गुण समाहित हैं। हरियाणवी संस्कृति हमें सामाजिक सम्बन्धों की गरिमा का पाठ पढ़ाती है, हमें नैतिक प्रेरणा देती है और बुजुर्गों का सम्मान करना सिखाती है।

कल्चरल फेस्ट जैसी सहगामी क्रियाएँ विद्यार्थियों में टीम-भावना, आपसी समझ, तालमेल, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा आदि गुण विकसित करती हैं। इस प्रकार के सांस्कृतिक उत्सव उनमें नवीन अभिरुचियाँ विकसित करते हैं। ये गतिविधियाँ एक उच्च कोटि का नागरिक बनाने का प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। उनमें लोकतांत्रिक गुण विकसित होते हैं। जब वे किसी सहगामी गतिविधि में भाग लेते हैं तो वे समूह में कार्य करना सीखते हैं। सामाजीकरण के साथ-साथ ये सहायक क्रियाएँ उनमें मानवीय गुण भी विकसित करने में सहायक हैं। विद्यार्थी आपस में एक दूसरे के विचारों से परिचित होते हैं तथा एक दूसरे की भावनाओं का आदर करना सीखते हैं। जब विद्यार्थी घर से बाहर निकलते हैं तो वे आत्मविश्वास से लबरेज हो जाते हैं। ये गतिविधियाँ विद्यार्थियों में नेतृत्व के गुण विकसित करने में सहायक सिद्ध होती हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि विद्यार्थी बहुत ही ज्यादा ऊर्जावान होते हैं, इन गतिविधियों में व्यस्त रखकर उनकी ऊर्जा का उचित उपयोग किया जा सकता है।

वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के वर्चस्व के कारण हमारी संस्कृति पर कुठाराघात हो रहा है। हम अपनी लोक संस्कृति और लोक कलाओं से विमुख हो रहे हैं। आज न ही किसी को लोकनृत्य आते हैं, न ही लोकगीत और न ही राग-रागनियों को गाने और सुनने का चाव रहा। वाद्य यंत्रों को बजाने वाले वादक धीरे-धीरे लुप्त होने के कगार पर हैं। अतः जरूरत है अपनी धरोहर, लोक कला और संस्कृति को बचाने की।

कल्चरल फेस्ट के माध्यम से लोक संस्कृति को संरक्षण मिल रहा है। बच्चे लोक नृत्य, राग-रागनियों में पारंगत हो रहे हैं जिससे भविष्य में उच्चकोटि के लोक कलाकार तैयार होंगे। कल्चरल फेस्ट के माध्यम से हरियाणवी संस्कृति अपनी अनूठी छाप छोड़ रही है। इस सांस्कृतिक उत्सव के लिए शिक्षक और विद्यार्थी अच्छे खासे उत्साहित नज़र आते हैं। यह एक सुखद अहसास है कि भावी पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति से दूर हटकर हरियाणवी संस्कृति को तहेदिल से अपना रही है। आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि यह सांस्कृतिक महोत्सव लोक-संस्कृति को सहेजकर नए आयाम स्थापित करेगा।

किशोरों में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति चिंताजनक

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

किशोरावस्था शैशव तथा बाल्यकाल के उपरांत आती है। यह 13 से 19 वर्ष तक की आयु तक का काल है। 11-12 वर्ष की आयु में बालक की नसों में ज्वार उठना आरंभ हो जाता है, इसे किशोरावस्था के नाम से पुकारा जाता है। यह वस्तुतः यौवन और बाल्यावस्था के मध्य पड़ने वाला संधिकाल है। इसको वयःसंधि एवं टीन एज भी कहा जाता है।

किशोरावस्था में बालक के शरीर और व्यवहार में तूफान गति से परिवर्तन होते हैं। उसमें अटपटापन, तनाव, आक्रोश, झंझावात, तीव्रता एवं आक्रामकता पायी जाती है।

किशोरों की प्रमुख समस्याएँ-

» बालक का शारीरिक विकास असामान्य रूप से होने से लड़कों में दाढ़ी-मूँछ निकलना, लड़कियों के स्तनों में उभार तथा चेहरे पर यौवन के लक्षण दिखने लगते हैं।

» किशोरों में कल्पना, दिवास्वप्न, विरोधी मानसिक दशाएँ उत्पन्न होती हैं। यौनांग में विकास के कारण विषम लिंगी आकर्षण बढ़ते हैं। प्रेम नामक रोग पराकाष्ठा पर पहुँचता है।

» नए जीवन दर्शन की तलाश में किशोर प्रायः अपराध प्रवृत्तियों में फँस जाते हैं। एडवेंचर भी उनको कई बार अपराध करने को विवश करते हैं।

» किशोरों में महत्त्वाकांक्षा अत्यधिक प्रबल होने लगती है, जिससे उनमें दूसरों को हानि पहुँचाना, कष्ट देना, बदला लेने की प्रवृत्ति, बंधनमुक्त रहने की छटपटाहट जैसी असामान्य भावनाएँ विकसित होने लगती हैं।

क्यों बनते हैं बालक अपराधी-

दूध में जब उफान आता है, तब उस समय उसकी पूरी देख-भाल करने की आवश्यकता होती है, अन्यथा बर्तन के बाहर गिरकर बर्बाद हो सकता है। बगीचे में फल जिन दिनों पकते हैं, उन दिनों उनकी पक्षियों से रखवाली पूरी सावधानी के साथ अपेक्षित होती है, अन्यथा एक भी फल साबुत नहीं बच सकता। ठीक यही दशा किशोरावस्था के संबंध में सही बैठती है। किशोरावस्था में जोश अधिक, होश कम होता है, इसलिए यदि स्वेच्छाचारिता बरती जाने लगे तो किशोरकाल की अनुभवहीनता के कारण सर्वनाश होता है।

आज के किशोरों में बढ़ती हिंसक प्रवृत्ति के कुछ उदाहरण घटित घटनाओं के रूप में चिंताजनक हैं -

1. इंदौर के एक निजी स्कूल में चौथी कक्षा के एक छात्र पर उसके ही तीन सहपाठियों ने ज्योमेट्री कंपास से 108 बार हमला कर घायल कर दिया। इस घटना में सम्मिलित सभी बच्चे 10 वर्ष से कम आयु के थे।
2. बीते मई में मध्यप्रदेश स्थित सिवनी में तीन बच्चों ने मिलकर अपने 12 वर्षीय मित्र की हत्या कर दी।
3. सरोजनी नगर, लखनऊ की निवासी बेटी प्रकृति, उम्र 16 वर्ष, को मोबाइल पर लगातार कॉल आ रही थी, तो माँ ने डाँटते हुए मोबाइल छीन लिया। माँ की डाँट से आहत प्रकृति ने कमरे में फाँसी लगा ली।
4. राजधानी दिल्ली की एक घटना में एक 16 वर्षीय किशोर ने 17 वर्षीय एक किशोर की नृशंस हत्या कर दी। आरोपित किशोर ने माँस काटने वाले चाकू से 50 से अधिक वार करते हुए अत्यंत क्रूरता से उसे मौत के घाट उतार दिया।

आज अनेक अवयस्क बच्चे पढ़ने की उम्र में अपराध की दुनिया में रक्त बहाने पर उतारू हैं। वे असंयत जीवनशैली, दूषित खानपान और आधुनिकता के उन्मुक्त वातावरण में पलकर समय से पहले ही युवा होने लगे हैं। दुर्भाग्यवश अपराध कार्यों में लिप्त किशोरों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। 10-12 वर्ष के बच्चे भीड़भाड़ का लाभ उठाकर लोगों की जेबें काट लेते हैं, रेलवे या बस स्टेशन पर लोगों को सोता देखकर उनका सामान लेकर रफूचक्कर हो जाते हैं। अपराध के इस कुचक्र में

बालिकाएँ भी पीछे नहीं हैं। वे भी चोरी और ठगी करने में शामिल हैं।

किशोर उम्र के किये जाने वाले अपराधों में, मादक द्रव्यों का सेवन, हिंसा, चोरी, यौन शोषण, कानून उलंघन, अनुशासनहीनता, दुर्व्यसन, दुर्व्यवहार, ठगी, बलात्कार आदि आते हैं। किशोर मनोविज्ञान के अध्ययन के अनुसार किशोरों में बढ़ती आपराधिक प्रवृत्ति के प्रमुख रूप से निम्नलिखित कारण हैं -

माता-पिता द्वारा उपेक्षा-

बालक का अच्छा या बुरा बनाने का प्रथम दायित्व परिवार का है। आज संयुक्त परिवार का चलन समाप्त होने से बच्चों को दादी-नानी जैसे अभिभावकों का संरक्षण नहीं मिल पाता है। माता-पिता स्वयं कामकाजी होने के कारण, बच्चों पर ध्यान नहीं दे पाते। माता-पिता में से कोई एक यदि अपराधी प्रवृत्ति का है तो उनके बच्चे स्वयंमेव अपराध मार्ग पर चल देंगे।

पारिवारिक विघटन-

वर्तमान युग में निरंतर बढ़ रहा पारिवारिक विघटन भी बालकों को अपराध की ओर बढ़ा रहा है। आपसी सामंजस्य का अभाव, बालक में अकेलेपन और विद्रोह की प्रवृत्ति जगा देता है। उसमें बड़ों के प्रति सम्मान और स्नेह की भावना नहीं रहती तथा वह अशिष्टता, अनुशासनहीनता और उच्छृंखलता का पाठ पढ़ने लगता है।

आदर्श शिक्षकों का अभाव-

अच्छे शिक्षकों से पढ़ने वाले छात्र अच्छे गुण सीख लेते हैं, किन्तु यदि शिक्षक ही अपराधी प्रवृत्ति का हो तो उसकी बुरी आदतों का बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षण संस्था के चारों तरफ का वातावरण यदि चोरों, यौन-हिंसा या भ्रष्ट व्यक्तियों से भरा होगा तो बालक में भी भ्रष्ट आचरण पनपेगा।

असामाजिक तत्त्वों का भ्रमजाल-

समाज में फैले असामाजिक तत्त्व भोले-भाले बालकों को बरगलाकर गलत रास्ते की ओर मोड़ देते हैं, उनसे अपने स्वार्थों की पूर्ति कराते हैं, फिर वे मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार, जुआ, नशा, तस्करी आदि अनैतिक धंधों में धकेल देते हैं।

खुला वातावरण बिगाड़ रहा किशोरों को-

पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से खुला वातावरण फैशन और प्रदर्शन को बढ़ावा दे रहा है। मानसिक रोग विशेषज्ञ का कहना है कि ऐसे में बच्चे गलत हरकतें कर बैठते हैं, जो उनके जीवन की दिशा को गलत मोड़ दे देती है। कई बार गलत दोस्तों का साथ मिलने पर किशोर बेकाबू हो जाते हैं। इससे वे अवसाद के शिकार हो जाते हैं। बच्चे अपने साथियों के आक्रामक व्यवहार की नकल करते हैं।

सोशल मीडिया से खतरे में है किशोरों का दिमाग-

सोशल मीडिया की बढ़ती आदत और चकाचौंध, सीधे

तौर पर बालकों के मानसिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचा रही है। एक अध्ययन से पता चला है कि जो बच्चे एक दिन में तीन बार सोशल मीडिया साइट का प्रयोग करते हैं, वे हिंसक वीडियो गेम्स देखते हैं, इससे उन्हें मानसिक रोग होने की संभावना रहती है। इस कुचक्र में लड़के और लड़कियाँ दोनों सम्मिलित हैं। वे फेसबुक, वाट्सएप, एप्पल, गूगल, ट्विटर और इंस्ट्राग्राम जैसी लोकप्रिय सोशल साइटों तथा डिजिटल प्लैटफॉर्म पर रात और दिन में कई घंटे बिताते हैं। धीरे-धीरे वे अश्लील वीडियो भी देखने लगते हैं और वे साइबर बुलिंग के शिकार होकर अनिद्रा, चिंता, गुस्सा, यौन हिंसा और मानसिक विकारों से ग्रस्त हो जाते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि किशोरवय के एक अरब बच्चे एक ही वर्ष में शारीरिक, यौन या भावनात्मक हिंसा एवं बाल अपराध या उपेक्षा का अनुभव करते हैं।

किशोरों में आपराधिक प्रवृत्ति विकसित होने से रोकने के लिए कुछ आवश्यक कदम यथाशीघ्र उठाने की आवश्यकता है -

» किशोरों में अनुशासन की भावना लाने हेतु माता-पिता को अपेक्षित नियंत्रण रखने की आवश्यकता है तथा स्वयं भी आचरण और व्यवहार से आदर्श प्रस्तुत करें। घर का वातावरण शांत, सरस और मित्रतापूर्ण होना चाहिए।

» विद्यालयों को छात्रों की गतिविधियों पर ध्यान रखना होगा। शिक्षकों को अपने भावी कर्णधारों को सुधारने की दृष्टि से आदर्श बनना होगा। बच्चों को साक्षर बनाने के साथ ही उनका चरित्र निर्माण करना भी प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए।

» परिवार के सदस्यों को बच्चों के साथ अधिक से अधिक समय व्यतीत करने, उनमें संस्कारों का पोषण करने, उन्हें संघर्ष समाधान कौशल सिखाने, संचार कौशल विकसित करने तथा सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

» किशोरों की अनियमित जीवन शैली पर अंकुश लगाया जाए। मोबाइल, कंप्यूटर, लैपटॉप पर काम करने के लिए स्क्रीन टाइम को संयमित किया जाए। देर रात तक जागने की प्रवृत्ति पर रोक लगायी जाए, जिससे उन्हें अपेक्षित नींद मिल सके।

» घर के बाहर खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाए। इसके लिए अच्छे मित्र बनाने के लिए सलाह दें। घर और स्कूल के बीच समय में अनावश्यक आवारागर्दी, मौजमस्ती या फास्टफूड सेवन पर नियंत्रण रखा जाए। बच्चे के शारीरिक और मानसिक व्यवहार में परिवर्तन को गंभीरता से लिया जाए तथा उसका समुचित समाधान किया जाए।

» किशोरों को कला-कौशल, शिल्प, आध्यात्मिक ज्ञान, तकनीक आदि विषयों की शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाए, जिससे उन्हें भविष्य में जीवन की दिशा तय करने में मार्गदर्शन मिल सके।

भारत में बाल अपराधियों की समस्या की रोकथाम के लिए सर्वप्रथम 1876 में एक कानून बना, जिसे 1897 में संशोधित किया गया। बाल अपराधियों के अलग से कारागार बनाए गए जिन्हें सुधारगृह का रूप दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1960 में भारतीय संसद ने बाल अधिनियम पारित किया। इस अधिनियम में सात वर्ष की आयु से लेकर सोलह वर्ष तक की आयु के बालक और 18 वर्ष तक की बालिका को बच्चा माना गया। इसके उपरांत संसद द्वारा 1986 में बनाए गए कानून में भी 16 वर्ष तक के लड़के तथा 18 वर्ष तक की लड़कियाँ को अपराध करने पर बाल अपराधी माना गया। यह व्यवस्था उन्हें कारागार में अन्य अपराधियों से अलग रखने हेतु की गई। अब समय परिवर्तन के साथ 10 वर्ष का बालक भी युवा जैसे अपराध करने लगे हैं। अतः बाल अपराधी की आयु को पुनः परिभाषित करने पर विचार किया जाना चाहिए। आज का बालक ही कल का नागरिक है। अतः देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए हमें आज के बालक को आदर्श बनाना होगा।

117, आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ- 226022

फिर चहकने लगी है रेवाड़ी की तक्षशिला

कँवाली के सरकारी स्कूल में बही रचनात्मक बदलाव की बयार

सत्यवीर नाहड़िया

विद्यालय तथा समाज परस्पर पूरक होते हैं। विद्यालय को लघु समाज भी कहा जाता है। जिस विद्यालय में समाज के बहुआयामी रचनात्मक सहयोग का जुड़ाव-लगाव रहता है, वह बड़ी से बड़ी चुनौतियों को पार करते हुए हर क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज कराता है। कभी देश तथा प्रदेश में अपनी विशिष्ट शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद की उपलब्धियाँ के चलते खास पहचान रखने वाले रेवाड़ी जिले के गाँव कँवाली स्थित सरकारी स्कूल अब नए सिरे से अपनी प्राचीन समृद्ध विरासत एवं गौरव को प्राप्त करने के लिए नवचारी प्रयास में साधनारत है, जिसमें विद्यालय के मुखिया की प्रेरक पहल पर सामाजिक संगठनों, पूर्व छात्रों, दानवीरों, अभिभावकों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की टीम वर्क ने विद्यालय की दशा एवं दिशा को बदल कर रख दिया है।

रेवाड़ी जिले के जाटूसाना खंड के अंतर्गत गाँव कँवाली स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में राष्ट्रीय पर्व स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर विद्यालय के 1944 से अब तक के सभी टॉपर्स को विशेष रूप से आमंत्रित करके अलंकृत किया गया, जिसमें अधिकांश उच्च पदों पर आसीन अधिकारी, व्यवसायी तथा समाजसेवी थे। इस अवसर पर उनके नाम का बनाया गये ऑनर बोर्ड का लोकार्पण भी किया गया तथा विद्यालय की भावी योजनाओं का रोड मैप प्राचार्य द्वारा मंच से रखा गया। अपने विद्यालय से भावनात्मक लगाव रखने वाले टॉपर्स ने इस अवसर पर अपने विद्यालय को दिल खोलकर दान दिया, जिसके चलते इस आयोजन में ही विद्यालय को करीब 11 लाख रुपए की बड़ी सहयोग राशि प्राप्त हुई।

हरियाणा स्कूल लेक्चरर्स एसोसिएशन के राज्य प्रधान रह चुके विद्यालय के प्राचार्य अनिल यादव ने यहाँ पदभार ग्रहण करने के बाद समाज एवं विद्यालय के उक्त परस्पर सहयोग के प्रेरक उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, जिनकी बदौलत यहाँ विद्यालय के हर बच्चे को ब्लेजर, जूते, जुराब व टाई निशुल्क वितरित किए गए हैं, पूरे भवन का जीर्णोद्धार करवाकर पेंट करवाया गया है, विद्यालय में सौर ऊर्जा का प्रबंधन किया गया है, ड्रिप इरिगेशन सिस्टम लगाकर इसे व्यावहारिक बनाया गया है, बिजली कनेक्शन को थ्री फेस करवाया गया है, पूरे विद्यालय परिसर को वाई-फाई युक्त किया गया है, शौचालयों तथा साइकिल स्टैंड का जीर्णोद्धार, प्रार्थना स्थल

तथा स्कूल परिसर में विभिन्न स्थलों पर टाइल ट्रेसिंग, चारदीवारी तथा पूरे भवन में वॉल पेंटिंग, विद्यालय के इतिहास पर आधारित स्मारिका रेवाड़ी की तक्षशिला का प्रकाशन, विद्यालय की सभी शिक्षकों तथा विद्यार्थियों को आईसीटी की ट्रेनिंग दिलवाना, अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया को रोचक एवं प्रभावी बनाने हेतु स्मार्ट बोर्ड, साप्ताहिक में मासिक क्विज कार्यक्रम, खेल गतिविधियों को बढ़ावा देने जैसे अनेक अनेक प्रकल्प प्रारंभ किए गए हैं, जिनसे विद्यालय में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है।

उल्लेखनीय है कि अहीरवाल के प्रथम विधायक बाबू मोहर सिंह की दूरदृष्टि एवं ऐतिहासिक पहल से आज़ादी प्राप्ति से पहले श्रीकृष्ण हाई स्कूल के नाम से बनाए गए स्कूल ने उन दिनों राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी। वर्ष 1966 में सरकारीकरण के बाद भी विद्यालय निरंतर खेल शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी विशिष्ट उपलब्धि दर्ज कराता रहा, किंतु पिछले दो दशकों से विभिन्न कारणों से निरंतर छात्र संख्या गिरती चली गई। अब फिर नए सिरे से इसके गौरवशाली अतीत एवं प्राचीन साख के अनुरूप नवाचारी प्रयास एक टीमवर्क से प्रारंभ हुए हैं, जिसके सुफल भी सामने आने लगे हैं। विद्यालय के गणित प्राध्यापक विजय कुमार, जहाँ इस वर्ष राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं, वहीं विद्यालय खंड स्तरीय मुख्यमंत्री सौंदर्यकरण योजना विजेता रहा है। अभिभावकों इस रचनात्मक बदलाव से अभिभूत हैं। विद्यार्थियों के चेहरों पर आत्मविश्वास की एक नई चमक देखने को मिल रही है। विद्यालय के स्टाफ को पूरा विश्वास है कि अगले शैक्षणिक क्षेत्र में विद्यालय में छात्र संख्या में वृद्धि होगी। प्राचार्य का मानना है कि विद्यालय को इसका प्राचीन गौरव दिलवाने के लिए साधना जारी रहेगी। वे समाज तथा शिक्षा विभाग से सभी मूलभूत ज़रूरतें प्राथमिकता से पूरा कर लेंगे।

अब देखना यह है कि नए शैक्षणिक सत्र में छात्र संख्या तथा कैंपस में गुणात्मक सुधार में कितना इज़ाफा होता है?

सत्यवीर नाहड़िया
प्राचार्य
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सीहा
रेवाड़ी, हरियाणा

छात्र रमन 'स्टूडेंट ऑफ़ द इयर' पुरस्कार से सम्मानित

पुरस्कार में भेंट की साइकिल व प्रतियोगी पुस्तकें

हर विद्यालय में कुछ छात्र बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते हैं। ऐसे छात्र शैक्षणिक, सांस्कृतिक व खेलकूद के अलावा विद्यालय के अन्य प्रकल्पों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर अपने अनूठी व्यक्तित्व की छाप छोड़ते हैं, जिसके चलते विद्यालय परिवार के हर सदस्य को ऐसे विद्यार्थियों पर गर्व होता है। रमन एक ऐसा ही होनहार विद्यार्थी है।

रेवाड़ी जिले के गाँव सीहा स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के बहुमुखी प्रतिभा के धनी मेधावी छात्र रमन को उक्त क्षेत्र की विभिन्न उपलब्धियों हेतु 'स्टूडेंट ऑफ द इयर' पुरस्कार से अलंकृत किया गया। पुरस्कार में छात्र को एक साइकिल तथा आईआईटी प्रवेश परीक्षा हेतु प्रतियोगी पुस्तकें दी गईं।

उल्लेखनीय है कि विद्यालय प्रतिमाह सर्वश्रेष्ठ सदन, सर्वश्रेष्ठ कक्षा सर्वश्रेष्ठ छात्र तथा सर्वश्रेष्ठ शिक्षक के पुरस्कार देता आ रहा है। अब इस कड़ी में वर्षभर के सर्वश्रेष्ठ छात्र का पुरस्कार 'स्टूडेंट ऑफ़ द इयर' प्रारंभ किया गया है, जिसके लिए रेवाड़ी जिले के धवाना गाँव के निवासी विद्यालय के 12वीं विज्ञान वर्ग के छात्र रमन को चुना गया तथा सभी स्टाफ सहयोगियों ने मिलकर उसे साइकिल एवं प्रतियोगी पुस्तक पुरस्कार में प्रदान की। छात्र रमन ने दसवीं में 96.4 प्रतिशत अंक लेकर जिले के सरकारी स्कूलों में तीसरा स्थान प्राप्त किया था। इस वर्ष छात्र रमन ने एक ओर जहाँ विद्यालय के डॉ. सीवी रमन साइंस क्लब का प्रेरक प्रतिनिधित्व किया है, वहीं खेलों में डिस्कस थ्रो, शॉट पुट, वॉलीबॉल तथा खो-खो में प्रेरक प्रतिभागिता दी है। इस वर्ष जिले से चयनित पाँच छात्रों के साथ रमन ने नेशनल साइंस सेंटर तथा नेहरू प्लैनेटेरियम की शैक्षणिक यात्रा भी की। शिवालिक सदन के प्रतिनिधि के तौर पर भी छात्र ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। इतना ही नहीं, जिला स्तर पर विजेता रही विद्यालय की युवा संसद टीम में छात्र रमन ने प्रतिपक्ष के नेता का दमदार किरदार भी निभाया। उक्त पुरस्कार के लिए चुना गया छात्र रमन आगे चलकर प्रशासनिक अधिकारी बनकर समाज और राष्ट्र की सेवा करना चाहता है।

पिछले दिनों विकसित भारत संकल्प यात्रा जन-संवाद कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय में पधारे कोसली के विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने भी छात्र रमन को ग्राम पंचायत एवं जिला प्रशासन की ओर से सम्मानित किया। उन्होंने विद्यालय की प्रतिमास प्रतिभा प्रोत्साहन एवं सम्मान समारोह की समृद्ध परंपरा में स्टूडेंट ऑफ़ द इयर पुरस्कार प्रारंभ करने के लिए विद्यालय परिवार की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की।

-सत्यवीर नाहड़िया

अनीता विद्यार्थियों के लिए शिक्षिका नहीं, माँ है

दीपा रानी

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो समय की धारा में बह जाया करते हैं, कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो इतिहास बनाया करते हैं। आज भी जब घर में दूसरी बेटी जन्म लेती है तो बोझ मानी जाती है। ऐसा ही हुआ जब करनाल जिले के एक छोटे से कस्बे नीलोखेड़ी में जन्म लिया अनिता ने। दादाजी ने 40 दिन तक उस बेटी का मुख नहीं देखा और कहा बेटा होना चाहिए था बेटी नहीं। लेकिन कहते हैं न कि बड़ा सौभाग्यशाली होता है वह घर जहाँ बेटी का जन्म होता है। इस कथन को अपनी लगन और कठिन परिश्रम से चरितार्थ कर दिखाया अनीता ने और 2021 में राज्य शिक्षक पुरस्कार लेकर अपने कुल का नाम रोशन किया।

विलक्षण प्रतिभा की धनी अनिता बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि की थीं। जैसे ही उन्होंने 12वीं कक्षा उत्तीर्ण की, दादाजी ने शादी का दबाव डालना शुरू कर दिया, पर अनीता ने भी ठान लिया था कि जब तक अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो जाऊँगी, शादी नहीं करूँगी। अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद आर्य कन्या गुरुकुल अंजनथली से प्रभाकर की और पलवल से ओटी की पढ़ाई पूरी की।

अपने स्कूल के दिनों में एक नाटक में अनीता ने झाँसी की रानी का किरदार अदा किया तब से सभी उसे झाँसी की रानी पुकारने लगे, क्योंकि वह भी उस वीरांगना की तरह निडर थी और कोई भी कार्य करने से नहीं घबराती थी और फिर जब वर्ष 1997 में सरकारी नौकरी का पत्र घर पर आया वही दादाजी फूट-फूट कर रोए और कहने लगे- बेटी ने बेटों से बढ़कर कमाल कर दिखाया।

1 दिसंबर, 1997 को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बल्ला में बतौर हिंदी अध्यापिका अपने सफ़र की शुरुआत की और शिक्षा विभाग को एक ऐसा रत्न मिला जिसने न जाने कितने ही बच्चों का भविष्य सँवारा। विद्यालय में अनीता ने लगभग अपनी उम्र के बच्चों को पढ़ाया और उन्हें नैतिक रूप से मज़बूत बनाया। घर से दूर नौकरी करना एक अविवाहित लड़की के लिए आसान नहीं होता, परंतु अनीता की सादगी ने उन्हें एक सुरक्षा कवच प्रदान किया इसके बाद सन् 2001 में उनका तबादला राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय गुढ़ा करनाल में हुआ। यहाँ इन्होंने सन 2001 से 2005 तक कार्य किया। अपने कार्यकाल के शुरुआत से ही अनीता ने बेटियों के उत्थान के लिए कार्य करना प्रारंभ कर दिया उन्होंने गाँव को, समाज को विद्यालय से जोड़ने का प्रयास किया और बहुत सी समाजसेवी संस्थाओं के सहयोग से विद्यालय का विकास करवाया। इस प्रकार गाँव को, समाज को विद्यालय से जोड़ती अनीता बच्चों के साथ-साथ गाँव वासियों की भी लोकप्रिय बनती चली गई।

गुढा में अपनी सेवाएँ देने के उपरांत उनका तबादला 2005 में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अंजनथली में हुआ जो उस समय केवल माध्यमिक विद्यालय था, लेकिन इनके अथक प्रयासों से यह विद्यालय राजकीय वरिष्ठ विद्यालय बन गया। अंजनथली में अनीता ने बच्चों को इतना प्यार दिया कि आसपास के गाँव और निजी स्कूलों के विद्यार्थी भी यहाँ आने लगे। अपने अंजनथली के कार्यकाल के दौरान उनका बोर्ड परीक्षा का परिणाम हमेशा शत प्रतिशत रहा। इसी दौरान 7 फरवरी, 2005 को उनका विवाह गणित अध्यापक भारतभूषण से हुआ अब अनीता को एक और मजबूत स्तंभ मिला उनके पति भी उनकी तरह कुशाग्र बुद्धि और हरफन मौला किस्म के थे, जिन्होंने हर कदम पर इनका साथ दिया, जिससे इनके व्यक्तित्व में और निखार आता गया।

अपने अध्यापन के साथ-साथ इन्होंने अपना

अध्ययन भी जारी रखा। इन्होंने बीए, एमए (हिंदी), एमए (इतिहास) और एमफिल (हिंदी) कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से दूरवर्ती शिक्षा के माध्यम से की। अनीता का बचपन से ही सपना था कि वह पुलिस में जाएँ और देश की सेवा करें परंतु शायद बच्चों को उनकी ज्यादा जरूरत थी, इसलिए इनकी किस्मत इन्हें शिक्षा विभाग में ले आई।

इकलौती बेटी की माँ अनीता अपने विद्यालय की हर बेटी की माँ बनती चली गई। अंजनथली गाँव की पंचायत ने अनिता को बहुत बार सम्मानित किया। अपने अंजनथली के 14 वर्ष के कार्यकाल में इनके मार्गदर्शन में बच्चों ने ब्लॉक स्तर और जिला स्तर पर बहुत सारे इनाम जीते और इनके जीवन की अविस्मरणीय और हृदयविदारक घटना जब इनका तबादला अंजनथली से हुआ उस गाँव का एक-एक बच्चा फूट फूट कर रोया और इनकी विदाई का वीडियो देश-विदेश तक वायरल हुआ इस वीडियो को करोड़ो लोगों ने देखा। एक अध्यापक के लिए इससे बड़ा सम्मान कोई नहीं हो सकता।

2019 की तबादला प्रक्रिया में इनका तबादला राजकीय माध्यमिक विद्यालय हैबतपुर में हुआ, जहाँ बच्चों की संख्या बहुत कम थी पर अनीता जैसी माँ से बच्चे कैसे दूर रह सकते थे? अनीता ने गाँव में घर-घर जा कर माता-पिता से गुहार लगाई और कहा कि एक बार मेरी गोद में अपना बच्चा दे दो, फिर आप महसूस करोगे कि घर से भी ज्यादा सुरक्षित इस मैडम की गोद में है। बस फिर क्या था, धीरे-धीरे बच्चों की संख्या बढ़ने लगी। निजी विद्यालय से भी अधिक बच्चे सरकारी विद्यालय में आने लगे। इनके पतिदेव भी इसी विद्यालय में कार्यरत थे। इस शिक्षक दंपती ने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। इस विद्यालय की लड़कियों को जो कभी अपने गाँव से बाहर भी नहीं निकली थीं, अनीता के मार्गदर्शन में कला उत्सव में नृत्य प्रतियोगिता में भाग लिया और जिला स्तर पर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इनके तबादले के बाद आज भी हैबतपुरवासी जब इनके बारे में बात करते हैं तो भावुक हो जाते हैं।

वर्ष 2022 में फिर से इनका तबादला राजकीय उच्च विद्यालय वीर बड़ालवा में हुआ वहाँ के बच्चे बहुत सौभाग्यशाली थे जो उन्हें ऐसी माँ मिली। करनाल जिले में इतना लंबा समय व्यतीत करने के बाद जून 2023 में अपनी पदोन्नति (हिंदी प्राध्यापिका) उपरांत इन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मिर्जापुर कुरुक्षेत्र में कार्यभार ग्रहण किया।

इनके कार्यकाल में अंजनथली स्कूल ने दो बार सौंदर्यकरण का पुरस्कार जीता। इन्हें 19 मई, 2022 को हरियाणा भूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया। रंगोत्सव 2022 में अनिता ने थियेटर एक्टिंग में राज्य स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया और जिला स्तर पर लगातार दो बार नृत्य प्रतियोगिता में भी प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वयं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए सिद्ध कर दिया

कि कला किसी उमर की मोहताज नहीं होती। उन्होंने टीएलएम प्रतियोगिता में भी जिला स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए अपनी अद्भुत कला का परिचय दिया। बहुत सी समाजसेवी संस्थाओं द्वारा अनीता को नारी-शक्ति के रूप में सम्मानित किया गया है। आज भी इनका जोश कम नहीं हुआ है। वह बच्चों को उतनी ही लगन और मेहनत से पढ़ाती हैं, जैसे अपने कार्यकाल के शुरू के दिनों में पढ़ाती थीं। उनके पढ़ाए हुए बच्चे आज अनेक क्षेत्रों में उच्च पदों पर आसीन हैं और अपनी इस अध्यापिका को आज भी उतना ही प्यार और सम्मान देते हैं। अनीता एक बहुत अच्छी मंच-संचालिका, पर्यावरण प्रेमी, समाज-सेविका, बहुत अच्छी अध्यापिका हैं। इनको इन सब उपलब्धियों के लिए हरियाणा राज्य शिक्षक पुरस्कार से नवाज़ा गया। यह अपनी इस पूरी सफलता का श्रेय अपने माता-पिता, गुरुजन, भाई राजेश, हमसफर भारत भूषण, प्यारे बच्चों और अध्यापक साथियों को देती हैं। शिक्षा विभाग को इस अमूल्य प्रतिभा की धनी शिक्षिका अनीता पर गर्व है।

प्रवक्ता, ललित कला
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय सैक्टर-19
पंचकूला, हरियाणा

प्यारे बच्चो!

'बाल सारथी' आपका अपना पन्ना है। हम चाहते हैं कि इसमें आपकी रचनाओं को स्थान दिया जाए। आपने कोई मौलिक कविता, कहानी या अन्य विधा की रचना लिखी हो तो अपने अध्यापक की सहायता से हमें ई-मेल या डाक द्वारा भेजें। आपकी रचनाओं को प्रकाशित करके हमें प्रसन्नता मिलेगी।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

-आपकी यामिका दीदी

विज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्रश्न 1- क्या चंद्रमा पर ध्वनि सुनी जा सकती है?

उत्तर- वहाँ वायुमंडल नहीं है, इस कारण ध्वनि नहीं सुनी जा सकती।

प्रश्न 2- आवर्त सारणी में सबसे हल्का तत्त्व कौन सा है?

उत्तर- हाइड्रोजन

प्रश्न 3- भूमि पर सबसे ऊँचा बिंदु कौन सा है?

उत्तर- एवरेस्ट पर्वत

प्रश्न 4- पेनिसिलिन की खोज किसने की ?

उत्तर- अलेक्जेंडर फ्लेमिंग ने

प्रश्न 5- पृथ्वी के वायुमंडल का मुख्य घटक क्या है?

उत्तर- नाइट्रोजन

प्रश्न 6- पदार्थ की तीन अवस्थायें कौन सी हैं?

उत्तर- ठोस, द्रव, गैस

प्रश्न 7- मानव शरीर में लाल रक्त कोशिकाओं का क्या कार्य है?

उत्तर- शरीर में ऑक्सीजन व कार्बन डाइऑक्साइड गैसों का परिवहन।

प्रश्न 8- किसी तत्त्व की सबसे छोटी इकाई क्या है?

उत्तर- परमाणु

प्रश्न 9- पृथ्वी की ऊर्जा का प्राथमिक स्रोत क्या है?

उत्तर- सूर्य

प्रश्न 10- उस प्रक्रिया का नाम बताएँ, जिसमें तरल गैस में बदल जाता है?

उत्तर- वाष्पीकरण

पार्थवी
कक्षा- ग्यारहवीं
मुकंद लाल पबलिक स्कूल यमुनानगर, हरियाणा

नोबेल पुरस्कार : प्रश्नोत्तरी

1. नोबेल पुरस्कार देने की शुरुआत कब हुई?

उत्तर- सन 1901 में

2. किस वैज्ञानिक के नाम पर नोबेल पुरस्कार दिया जाता है?

उत्तर- अल्फ्रेड नोबेल

3. अल्फ्रेड नोबेल ने किसकी खोज की थी?

उत्तर- डाइनामाइट की

4. शुरुआत में यह पुरस्कार कितने क्षेत्रों में दिया जाता था?

उत्तर- 5 क्षेत्रों में (फिजिक्स, केमिस्ट्री, मेडिसिन, साहित्य, शान्ति)

5. अब नोबेल पुरस्कार कितने क्षेत्रों में दिया जाता है?

उत्तर- छह क्षेत्रों में

6. छठा क्षेत्र कौन सा है?

उत्तर- इकोनॉमिक साइंस

7. नोबेल पुरस्कार एक वर्ष में एक क्षेत्र में अधिकतम कितने लोगों को दिया जाता है?

उत्तर- 3 लोगों को।

8. इस बार कितने लोगों को पुरस्कार देने की घोषणा की गई है?

उत्तर- 11 लोगों को

9. शांति का नोबेल पुरस्कार कहाँ दिया जाता है?

उत्तर- नॉर्वे की राजधानी ओस्लो में

10. शांति के नोबेल पुरस्कार को छोड़कर बाकी सभी नोबेल पुरस्कार कहाँ दिए जाते हैं?

उत्तर- स्वीडन की कैपिटल स्टॉकहोम के कॉन्सर्ट हॉल में

-कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
सराय अलावर्दी
गुरुग्राम (हरियाणा)

पहेलियाँ

1. नाभिक के जो बाहर घूमें
ऐसे कण को क्या कहते?
सोच समझ कर बोलो बच्चो,
सदा घूमते ये रहते।

2 नाभिक के अंदर जो रहते,
ऐसे कण क्या कहलाते हैं?
सदा ही स्थिर ये रहते हैं,
उदासीन इनको पाते हैं।

3. नाभिक के ये अंदर रहते,
इन कणों को क्या कहते?
सोचो समझो और बताओ,
धनावेशित हैं रहते।

4. लोहे को मैं दूँढ़ निकालूँ,
लकड़ी से मैं हारा।
रबर प्लास्टिक कभी न पकड़ूँ,
बोलो रोली तारा।

5. दो या दो से अधिक तत्व जब,
फिक्स रेशियो में मिल जाते।
ध्यान लगाओ मत घबराओ,
बोलो क्या वे कहलाते।

6. दो या दो से अधिक तत्व जब,
किसी रेशियो में मिल जाते।
सोचो समझो हमें बताओ,
बनकर वे क्या कहलाते?

7. मैं ऐसी हूँ गैस निराली,
सबको जीवन देने वाली।
पेड़ों से भी मुझको पाओ,
झट से मेरा नाम बताओ।

8. पाकर मुझको राधा रानी,
खिलखिला कर हँसते।
झटपट मेरा नाम बताओ,
जाओ अपने रस्ते।

उत्तर- 1.इलेक्ट्रॉन,2. न्यूट्रॉन, 3. प्रोटॉन, 4.चुम्बक, 5. यौगिक, 6.मिश्रण, 7.ऑक्सीजन, 8.नाइट्रस ऑक्साइड,

डॉ. कमलेंद्र कुमार
रावगंज, कालपी जिला जालौन
उत्तर प्रदेश, पिन- 285204

जैसे को तैसा

एक स्थान पर जीर्णधन नाम का बनिये का लड़का रहता था। धन की खोज में उसने परदेश जाने का विचार किया। उसके घर में विशेष सम्पत्ति तो थी नहीं, केवल एक मनभर भारी लोहे की तराजू थी। उसे एक महाजन के पास धरोहर रखकर वह विदेश चला गया। विदेश से वापिस आने के बाद उसने महाजन से अपनी धरोहर वापिस मांगी। महाजन ने कहा- वह लोहे की तराजू तो चूहों ने खा ली।

बनिये का लड़का समझ गया कि वह उस तराजू को देना नहीं चाहता। किन्तु अब उपाय कोई नहीं था। कुछ देर सोचकर उसने कहा- कोई चिन्ता नहीं। चूहों ने खा डाली तो चूहों का दोष है, तुम्हारा नहीं। तुम इसकी चिन्ता न करो।

थोड़ी देर बाद उसने महाजन से कहा- मित्र! मैं नदी पर स्नान के लिए जा रहा हूँ। तुम अपने पुत्र धनदेव को मेरे साथ भेज दो, वह भी नहा आयेगा।

महाजन ने अपने पुत्र को उसके साथ नदी-स्नान के लिए भेज दिया। बनिये ने महाजन के पुत्र को वहाँ से कुछ दूर ले जाकर एक गुफा में बन्द कर दिया। जब वह महाजन के घर आया तो महाजन ने पूछा- मेरा लड़का कहाँ है?

बनिये ने कहा- उसे चील उठा कर ले गई है।

महाजन ने कहा- यह कैसे हो सकता है? कभी चील भी इतने बड़े बच्चे को उठा कर ले जा सकती है?

विवाद करते हुए दोनों राजमहल में पहुँचे। वहाँ धर्माधिकारी ने बनिये से कहा- इसका लड़का इसे दे दो। बनिया बोल- महाराज! उसे तो चील उठा ले गई है।

धर्माधिकारी ने कहा- क्या कभी चील भी बच्चे को उठा ले जा सकती है?

बनिये ने कहा- प्रभु! यदि मन भर भारी तराजू को चूहे खा सकते हैं तो चील भी बच्चे को उठाकर ले जा सकती है। धर्माधिकारी के प्रश्न पर बनिये ने अपनी तराजू का सब वृत्तान्त कह सुनाया। बनिये ने गलती मानकर तराजू दे दी और उसे अपना बच्चा भी वापिस मिल गया।

-पंचतंत्र से

हाथी आया

सूँड हिलाता हाथी आया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
पूँछ हिलाता हाथी आया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
ठुमक ठुमक कर पेट हिलाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
बड़े-बड़े कानों को फैलाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
बड़े-बड़े दाँतों को दिखाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
चार पैरों पर खूब नाच दिखाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
मोटी-मोटी आँखों को घुमाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
बच्चों को खूब हँसाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
टन-टन घंटी को बजाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

हाथी आया हाथी आया
साथ अपने खुशियाँ लाया
किसने देखा
मैंने देखा उसने देखा।

संदीप भारद्वाज 'शांत'
प्राथमिक शिक्षक
राप्रापा चीला, तावडू
नूँह, हरियाणा

होली का त्योहार

होंगे रंगों से सराबोर
आ गया होली का त्योहार

पिचकारी हर रोज बिकेगी
रंगों की धूम मचेगी
गुलाल की कई वैराइटी
जगह जगह सजी दिखेगी

करेंगे रंगों की बौछार
आ गया होली का त्योहार

होंगे मीठे कई पकवान
मम्मी देती हमें मिष्ठान्न
करें हम दोस्तों संग मस्ती
देख होंगे सब हैरान

नफरत की खत्म हो दीवार
होली अनूठा है त्योहार

प्रेम का पर्व है होली
सब करते हँसी-ठिठोली
फगुआ के गाते खूब गीत
रंग खेलते हैं हमजोली

रहता बच्चों को इंतजार
बच्चों का है प्रिय त्योहार

बच्चों को हो खूब आनंद
रंग खेलें दिन भर संग
बच्चे किसी को भी न छोड़ें
रंग में हो उन्हें उमंग

प्रेम की खूब बहे रसधार
होली सबका प्रिय त्योहार

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
मुहल्ला- बरगदवा (नई बस्ती),
निकट गीता पब्लिक स्कूल
पोस्ट- गांधीनगर, जिला- बस्ती
(उप्र)- 272002

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

आदरणीय अध्यापक साथियो व उत्साही विद्यार्थियो! 'खेल-खेल में विज्ञान' शृंखला के अंतर्गत कुछ नई व रुचिकर कक्षाकक्ष व कक्षा से बाहर की विज्ञान गतिविधियाँ (क्रमांक 225 से 230)आपके समक्ष प्रस्तुत हैं-

1. जार में झूलता क्लिप (चुंबक के खेल)-

'झूलता या लटकता पेपर क्लिप' नाम से गतिविधि बनाने में बच्चे बहुत एक्सपर्ट हो चुके हैं। इस बार उन्होंने एक लंबा व प्लास्टिक का पेटजार लिया। उस जार के ढक्कन पर उन्होंने एक चुंबक को पोस्टरटेप के द्वारा चिपकाया। पेटजार की तली में सुराख करके धागे के द्वारा एक पेपर क्लिप (यू-क्लिप) फिट किया। धागे की लंबाई को इतना रखा कि वह पेपर क्लिप चुंबक के करीब तक पहुँचे और इतने करीब कि चुंबक उसको अपनी और आकर्षित करता रहे। अब उन्होंने जार को उल्टा करके फिर सीधा किया तो वह पेपर क्लिप चुंबक की ओर आकर्षित होता हुआ हवा में झूलने लगता है। कक्षा 6 से 8 के कई विद्यार्थियों ने इस गतिविधि को तैयार किया व अन्य विद्यार्थियों को करके दिखाया।

2. चुंबकीय पुल बनाया-

विद्यार्थियों ने फैरेटिक स्टेनलेस स्टील वाले एक रुपए के आठ सिक्के, दो काँच के गिलास व दो चुंबकों की मदद से एक संरचना तैयार की तथा उसका नामकरण चुंबकीय पुल किया। उन्होंने उल्टे पड़े काँच के दो गिलासों के ऊपर एक-एक चुंबक रखा और उनके बीच की दूरी आठ इंच रखी। अब दोनों चुंबकों के सिरों से सिक्का दर सिक्का लगाते चले गए। दोनों तरफ से आ रही सिक्कों की इस लाइन को मध्य से जोड़

दिया गया। इस प्रकार विद्यार्थियों ने दो चुंबकों और सिक्कों के द्वारा चुंबकीय पुल तैयार किया। इस पुलपर उन्होंने भिन्न-भिन्न वस्तुएँ जैसे माचिस, पेन व इरेज़र इत्यादि रखकर उसकी मज़बूती की भी जाँच की।

3. पेपर क्लिप्स और स्ट्रॉ से बनाया गोताखोर-

विद्यार्थियों ने आर्कमडीज सिद्धांत, उत्प्लावन बल व वायु का संपीड़न समझने के लिए स्ट्रॉ और पेपरक्लिप की मदद से एक नए प्रकार का आज्ञाकारी गोताखोर बनाया। उन्होंने

एक स्ट्रॉ को यू शेप में मोड़ लिया और उसके नीचे सुराखों में पेपर क्लिप लगाकर इस लटकन को जब पानी से भरी बोतल में छोड़ा तो वह सीधा नहीं तैर रहा था। उन्होंने पेपर क्लिप्स को कम या ज्यादा करके समायोजन करके उसे पानी सीधा खड़ा कर लिया। बोतल का ढक्कन बंद करके जैसे ही बोतल को दबाया गया, दबाने से बोतल का भीतरी आयतन कम होने की वजह से हटाए गए पानी ने स्ट्रॉ के अंदर की वायु को संपीड़ित किया। इस प्रकार उस पानी ने स्ट्रॉ के भीतर अपने लिए जगह भी बनाई, जिससे कि वह पानी स्ट्रॉ से बाहर निकल गया और गोताखोर फिर से ऊपर आ गया।

4. स्ट्रॉ से बनाई पिपनी-

साधारण स्ट्रॉ से 1 इंच से 5 इंच तक साइज के कुछ टुकड़े काट लिए। उन टुकड़ों को एक सिरे से अंग्रेज़ी के अक्षर वी के रूप में काट लिया गया। स्ट्रॉ की वी शेप वाली साइड को मुँह में रखकर फूँकने स्ट्रॉ के वी शेप वाले बारीक किनारों पर कंपन उत्पन्न होता है जिसके फलस्वरूप ध्वनि उत्पन्न हुई। इस प्रकार स्ट्रॉ से बनाई गई इन पिपनियों से विद्यार्थियों ने विज्ञान कक्ष में बहुत शोर मचाया और ध्वनि कंपन से उत्पन्न होती है, यह सीखा। स्ट्रॉ पिपनी के दूसरे सिरे पर एक कीप लगाकर उत्पन्न ध्वनि के विस्तारण को भी समझा।

5. एल्युमिनियम फॉयल से बनाया विद्युत परिपथ-

विद्यार्थियों ने एलईडी, एल्युमिनियम फॉयल व सेलो टेप द्वारा विद्युत परिपथ बनाने की एक नई विधि को सीखा। उन्हें पता था कि एल्युमिनियम धातु विद्युत की सुचालक होती है। उन्होंने एल्युमिनियम फॉयल की बारीक व लंबी कतरने काटकर उन्हें चालक तारों के स्थान पर प्रयोग किया और वे कामयाब हुए। इस प्रकार उन्होंने एक एलईडी को रोशन करके दिखाया। इसके बाद उन्होंने श्रेणी-क्रम संयोजन भी तैयार किया। एलईडी से उत्पन्न प्रकाश की चमक के घटने को प्रत्यक्ष जाँचा।

अच्छा, तो आदरणीय अध्यापक साथियो व प्रिय विद्यार्थियो, आगामी अंक में फिर से मिलते हैं नई विज्ञान गतिविधियों के साथ।

साइंस मास्टर/ ईएसएचएम
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय दामला
खंड जगाधरी, यमुनानगर, हरियाणा

मम्मी की रसोई, मेरी प्रयोगशाला

सुनील अरोरा

बच्चों के लिए उनके घर की रसोई ही उनकी विज्ञान प्रयोगशाला है। यदि वे ध्यान से हर प्रक्रिया को देखें तो उन्हें हर तरफ विज्ञान के नियम लागू होते दिखेंगे। चाय बनाना, आटा गूँथना, प्याज काटना या दही जमाना सब प्रक्रिया में या तो भौतिक परिवर्तन या रासायनिक अभिक्रिया या फिर कोई जैविक क्रिया शामिल होती है। चलिए, आज इस कड़ी में बात करेंगे रसोई में सबसे ज्यादा उपयोग होने वाले बर्तन प्रेशर कुकर की।

प्रेशर कुकर का नाम ही इसका कार्य करने का सिद्धांत बता रहा है। प्रेशर कुकर में खाना भाप की ऊष्मा से जल्दी तैयार हो जाता है। तो चलिए, पहले भाप की शक्ति की बात कर लेते हैं।

हम लोगों की दिनचर्या शुरू होती है चाय के एक कप से। चाय बनाने के लिए हम पहले जल को गर्म करते हैं। जल का क्वथनांक 100 डिग्री सेल्सियस है। इस तापमान पर जल भाप बनता है। भाप में जल से अधिक ऊर्जा होती है। भाप की ऊर्जा का उपयोग बहुत से यांत्रिक कार्य करने के लिए किया जाता है, जैसे कि स्टीम इंजन। वैसे तो ये भाप पारदर्शी होने के कारण दिखती नहीं है पर वायु में यह संघनन हो कर हमें दिखने लगती है। वर्षा के होने का भी यही सिद्धान्त है। जल जलाशयों से भाप बनकर उड़ जाता है तथा फिर भाप संघनन प्रक्रिया से वर्षा के रूप में जल धरती पर वापिस आ जाता है ।

अक्सर जब आप कढ़ाई में कोई सब्जी बनाते हैं तो आप उस पर ढक्कन लगा देते हैं। जब आप सब्जी बनने पर उसका ढक्कन हटाते हैं तो उस ढक्कन के अंदरूनी भाग पर जल की बूँदें होती हैं जो कि सब्जी में मौजूद जल के वाष्पीकरण के कारण पैदा होती हैं।

भाप के पास उबलते जल से ज्यादा ऊष्मा होती है, जब उबलता जल व भाप दोनों 100 डिग्री सेल्सियस तापमान पर होते हैं। इसलिए तो भाप से जलने के घाव गहरे बनते हैं। इसी कारण चेहरे पर भाप लेते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए।

वास्तव में जल के वाष्पीकरण की गुप्त ऊष्मा बहुत उच्च होती है ये लगभग 40.68kj/mol होती है। यह ऊर्जा हमारी चमड़ी को जला कर घाव दे सकती है।

हम जब भी कोई सब्जी बनाते हैं तो उसे किसी ढक्कन से ढक कर बनाते हैं। ऐसा दो कारणों से करते हैं। पहला कारण है- जो भाप बनती, वह अंदर ही रहती है, जिससे खाना जल्दी बन जाता है और हमारा इंधन बचता है। दूसरा- हम उस भोजन में उपस्थित पोषक तत्त्वों की व्यर्थता को बचाते हैं।

प्रेशर कुकर भी इसी सिद्धान्त पर कार्य करता है। यह खाने को उच्च दाब पर पकाता है। यह दाब कुकर के अंदर एकत्रित भाप से बनता है। इस प्रकार कुकर भोजन के पोषक तत्त्वों को बचाता है। क्वथनांक वह तापमान होता है जिस पर वाष्प का दाब, वायु दाब के बराबर हो जाता है, परन्तु प्रेशर कुकर में ये दाब बढ़ जाता है, जिससे जल का क्वथनांक भी बढ़ जाता है।

प्रेशर कुकर में खाने को 100 डिग्री सेल्सियस से भी अधिक तापमान पर पकाया जाता है। इसका एक फायदा तो ये है कि खाने में उपस्थित बहुत से सूक्ष्म जीव मर जाते हैं। प्रेशर कुकर में 15 psi का प्रेशर बनाया जाता है जिससे जल का तापमान 121 डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जो हमारे खाने को जल्दी पका देता है।

परन्तु प्रेशर कुकर में खाना बनाते समय हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कुकर सिर्फ दो तिहाई भाग तक ही भरा हो जिससे भाप को अंदर स्थान मिल सके। जब आप उसे ऊष्मा देते हैं तो कुकर में पानी भाप बनता है। ये भाप कुकर के अंदर रहती है और दाब को बढ़ाती है। दाब बढ़ने से तापमान भी बढ़ता है तथा जल का क्वथनांक भी 100 डिग्री से ऊपर चला जाता है। जब एक निश्चित दाब आ जाता है, तब अतिरिक्त भाप को ढक्कन में लगे लिड के वाल्व से बाहर कर दिया जाता है। ऊँचे पहाड़ी इलाकों में प्रेशर कुकर ने खाना पकाने को बहुत सुगम कर दिया है। वहाँ वायुमण्डलीय दाब कम होता है, इसलिए कुकर का उपयोग बहुत आवश्यक हो जाता है।

पीजीटी, राजकीय सार्थक विद्यालय
सैक्टर- 12ए, पंचकूला

सत्कार और तिरस्कार

एक थका-माँदा शिल्पकार लंबी यात्रा के बाद किसी छायादार वृक्ष के नीचे विश्राम के लिये बैठ गया। अचानक उसे सामने एक पत्थर का टुकड़ा पड़ा दिखाई दिया। उसने उस सुंदर पत्थर के टुकड़े को उठा लिया, सामने रखा और औजारों के थैले से छेनी-हथौड़ी निकालकर उसे तराशने के लिए जैसे ही पहली चोट की, पत्थर ज़ोर से चिल्ला पड़ा- उफ! मुझे मत मारो। दूसरी चोट पर और ज़ोर से चीखने लगा- मत मारो मुझे, मत मारो...मत मारो।

शिल्पकार ने उस पत्थर को छोड़ दिया, अपनी पसंद का एक अन्य टुकड़ा उठाया और उसे हथौड़ी से तराशने लगा। वह टुकड़ा चुपचाप वार सहता गया और देखते ही देखते उसमें से एक देवी की मूर्ति उभर आई। मूर्ति वहीं पेड़ के नीचे रख वह अपनी राह पकड़ आगे चला गया।

कुछ वर्षों बाद उस शिल्पकार को फिर से उसी पुराने रास्ते से गुजरना पड़ा, जहाँ पिछली बार विश्राम किया था। उस स्थान पर पहुँचा तो देखा कि वहाँ उस मूर्ति की पूजा अर्चना हो रही है, जो उसने बनाई थी। भीड़ है, भजन आरती हो रही है, भक्तों की पंक्तियाँ लगीं हैं, जब उसके दर्शन का समय आया, तो पास आकर देखा कि उसकी बनाई मूर्ति का कितना सत्कार हो रहा है! जो पत्थर का पहला टुकड़ा उसने, उसके रोने चिल्लाने पर फेंक दिया था वह भी एक ओर में पड़ा है और लोग उसके सिर पर नारियल फोड़-फोड़ कर मूर्ति पर चढ़ा रहे है।

शिल्पकार ने मन ही मन सोचा कि जीवन में कुछ बन पाने के लिए शुरू में अपने शिल्पकार को पहचानकर, उनका सत्कार कर कुछ कष्ट झेल लेने से जीवन बन जाता है। बाद में सारा विश्व उनका सत्कार करता है। जो डर जाते हैं और बचकर भागना चाहते हैं, वे बाद में जीवन भर कष्ट झेलते हैं। उनका सत्कार कोई नहीं करता।

विनय मोहन खारवन
प्राध्यापक गणित
सेक्टर 18, जगाधरी, हरियाणा

2024

मार्च माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

4 मार्च- राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस
5 मार्च- महर्षि दयानंद जयंती
8 मार्च- महाशिवरात्रि
12 मार्च- संत लाडू नाथ जयंती
15 मार्च- हसन खाँ मेवाती शहीदी दिवस
20 मार्च- विश्व गौरेया दिवस
22 मार्च- विश्व जल दिवस
23 मार्च- भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव का शहीदी दिवस
25 मार्च- होली
27 मार्च- विश्व रंगमंच दिवस
29 मार्च- गुड फ्राइडे

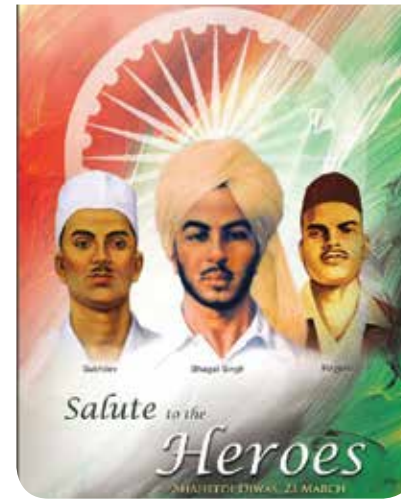

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत् से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Inclusive Education for Children with Special Needs

"Diversity is a fact, Equity is a choice, Inclusion is an action and Belonging is an outcome."

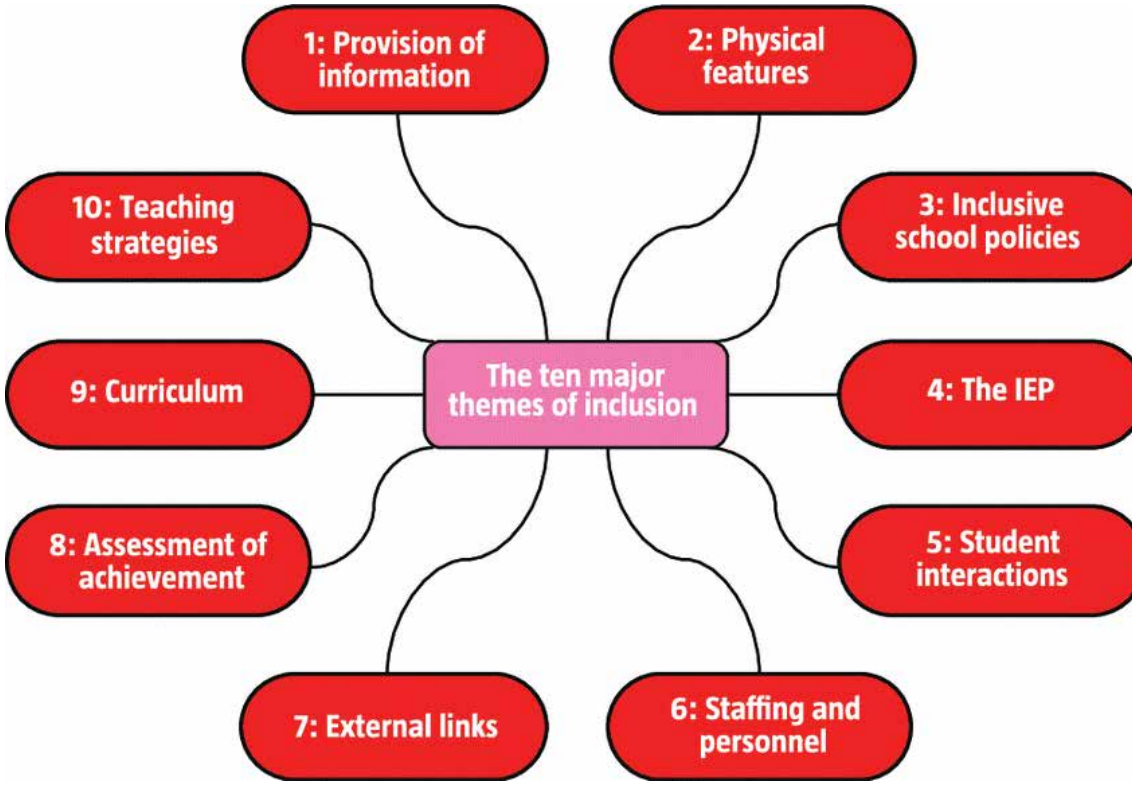

Dr. Sunita Yadav

Introduction:

A child has special educational needs if they have a learning problem or disability that makes it more difficult for them to learn than most children of their age. They may have problems with schoolwork, communication or behavior. Parents can get help and advice from specialists, teachers and voluntary organisations.

Inclusive education is a strategy of making education universalized irrespective of any disability within the learner and to maintain equity in society. It accentuates that children with special needs can be included in a holistic platform without any kind of isolation. Avoiding the option of segregation and making them confined within the boundaries of special schools, experts of inclusive education are advocating the inclusion of children with special needs into the common schools.

According to Loreman and Deppeler, "Inclusive Education means full inclusion of children with diverse abilities in all respects of schooling that

other children can access and enjoy." Inclusion is a term that can be defined as an attitude or a commitment to appreciating diversity and accepting that all children can be educated in a common school to their maximum potential. It requires increasing the capacity of regular schools so that they can respond creatively to greater diversities. It also involves building the capacities of teachers to deal with a diverse population of students and to acquire pedagogical competencies that facilitate the learning of all students in their classroom. An inclusive school is a school where everyone belongs, is accepted, and is supported by his/her peers and other members in mainstreaming. Once inclusive schooling is achieved integration and mainstreaming will no longer be necessary since no one will be left out to be integrated.

Inclusive Education (IE) is a new approach towards educating children with disability and learning difficulties with that of normal ones under the same roof. It brings all students together in one classroom and community, regardless of their strengths or weaknesses in any area, and seeks to maximize their potential.

IE is providing education to specially abled students along with normal students and by providing facilities and normal atmosphere as given to normal students. IE helps to realize one's own importance in the society. Differently abled children see themselves as a part of this society and they have their own capacities. It helps to overcome inferiority complex and develop students' abilities.Inclusive education creates empathy or positive attitude towards differently-abled children in the minds of normal pupils.

NEP 2020 states that,Education is the single greatest tool for achieving social justice and equality. Inclusive and equitable education — while indeed an essential goal in its own right — is also critical to achieving an inclusive and equitable society in which every citizen has the opportunity to dream, thrive, and contribute to the nation. The education system must aim to benefit India's children so that no child loses any opportunity to learn and excel because of circumstances of birth or background. This Policy reaffirms bridging the social category gaps in access, participation, and learning outcomes in school education.

Fig.3.13: Status of school attendance of disabled population 5-19 years in India (in %) - Census, 2011

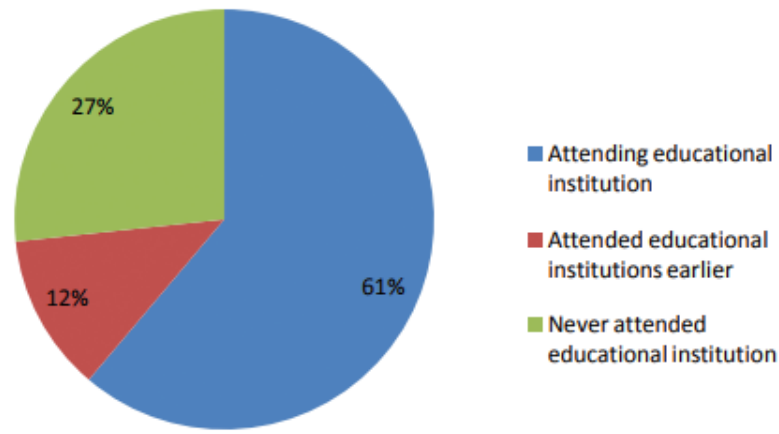

Special Educational Needs: -

It means a legal definition and refers to children with learning problems or disabilities that make it harder for them to learn than most children the same age. If your child has special

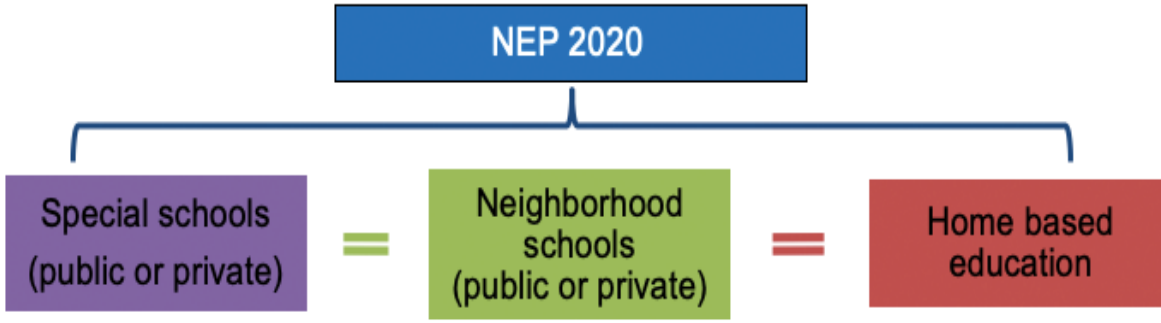

educational needs, they may need extra help: -

- with schoolwork
- reading, writing, number work or understanding information
- expressing themselves or understanding what others are saying
- making friends or interacting with adults
- behaving properly in school
- organising themselves

They might have sensory or physical needs that affect them in school.

What do Inclusive Education Programs Offerfor Special Needs Students ?

Inclusive education programs provide educational services for all students including those with special needs. These programs serve all children in the regular classroom on a full-time basis. If a student requires extra services such as speech therapy, these services are brought into the classroom. This program allows the student to remain in the regular education classroom setting at all times. This program is intended to meet the objectives of IDEA (The Individuals with Disabilities Education Act) by educating students in the regular classroom while still providing for their unique needs.

There are variables in inclusive education programs, which make a standard definition of inclusion misleading. Full inclusion is described as placing all students, regardless of disabilities and severity, in the regular classroom on a full-time basis. These students do not leave the regular classroom for services specified in their IEP (Individualised Education Programme), but these services are delivered to them in the regular classroom setting. Inclusion or mainstreaming refers to students being educated with non-disabled peers for most of their school day. A special education teacher collaborates with a general education teacher to provide services for students. The general education teacher is responsible for instructing all children, even those with an IEP. The special education teacher collaborates with the general teacher on strategies.

Another placement option places students with disabilities in the general classroom with the special education teacher providing support and assisting the general education teacher in instructing the students. The special education teacher brings materials

into the classroom and works with the special student during math or reading instruction. The special education teacher aids the general education teacher in planning different strategies for students with various abilities.

When the IEP team meets to determine the best placement for a child with disabilities, they must consider which placement constitutes the least restrictive environment for the child based on individual needs.

The team must determine which setting will provide the child with the appropriate placement. The primary objective of inclusive education is to educate students who have disabilities in the regular classroom and still meet their individual needs. Inclusive education allows children with special needs to receive a free and appropriate education along with general education students in the regular classroom.

Barriers of inclusive education

- Inflexible school curriculum.
- Inappropriate communication.
- Lack of inclusive learning environment.
- Irresponsible attitude of government.
- Social and cultural stereotyping.
- Lack of knowledge of local services.
- Misinterpreted concept of inclusive education.
- Lack of trained teachers.

Special schools for children with visual impairment, hearing impairment, and locomotor disabilities are streamlined to follow a curriculum that is almost in line with the general education curriculum. The plus curriculum and the adaptation of instructional methodologies are followed where necessary. Children with mental retardation on the other hand require a specialised curriculum to meet their specific educational needs. Over time, however, there has been growing awareness that special education in special schools may be overly restrictive, and instead of working outside the mainstream classrooms, the special schools can work with, and provide support to regular schools. Early in 1992, the Programme of Action, while promoting integrated education, had also suggested a Pragmatic Placement Principle.

Issues in Inclusive Set-Up:

1. Less Student Enrolment: The enrolment rate of children with disabilities is at least on par with that of non disabled children in the mainstream education system.
2. Lack of Competencies among Teachers: Teachers are the key actors in successfully implementing inclusive education. There is a lack of Competency, Proper knowledge, and educational qualifications which are required from teachers to fulfil the predetermined purpose.
3. Large Class Sizes: large classes are a big hindrance for special students to take full advantage of mainstream classes.
4. Rigid Curriculum: Rigidity in the curriculum does not allow the special students to go at par in learning with the normal ones. No special curriculum is here to fulfil the diverse needs of special students.
5. Inadequate pre-service training and professional development: Lack of training and professional development of mainstream teachers at all levels are the big issues in inclusive education.

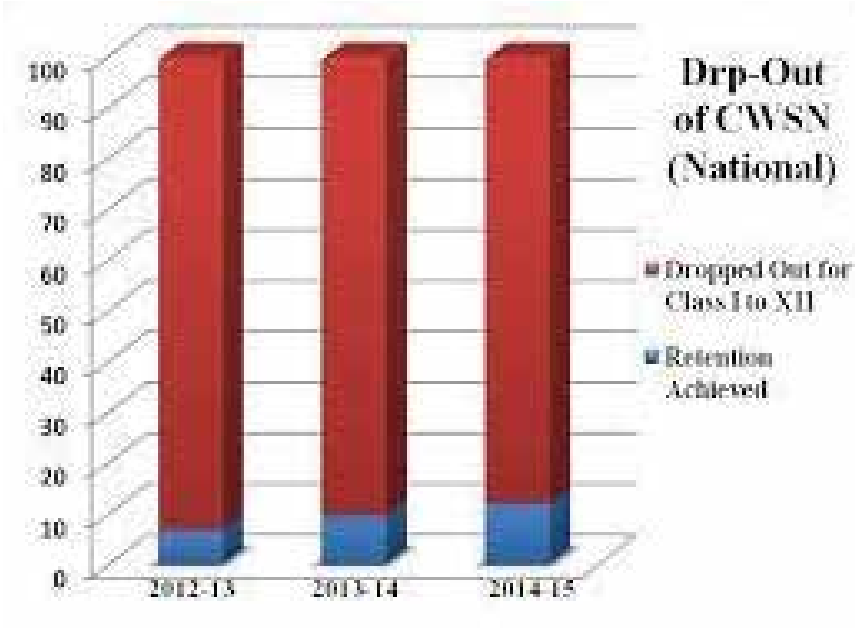

6. Negative Attitude of Parents and Teachers: Negative Attitude of Parents and Teachers towards disability, differently abled, and marginalized children is also one of the major issues in the inclusive education setup.
7. Inadequate Infrastructure:The lack of infrastructural facilities in our institution is one of the big issues that hinders us from realizing the dream of inclusive education.
8. Lack of Assistive devices: In an inclusive classroom, there is a Lack of Assistive devices which may assist the special students to take full advantage from the classes.
9. More use of Power Point Presentations in the Class: Nowadays we use technology to make our teaching-learning process effective but at the same time when we have different types of students in the same class, we ignore the diverse needs of special students.
10. Lack of Community Will and Participation: Lack of Willingness of parents as well as community seems there to send their wards to mainstream institutions.
11. Lack of Political Will towards Implementation of Inclusive Education: Lack of Political Will towards Implementation of Inclusive Education is one of the biggest issues in realizing the dream of inclusion in a practical manner.
12. Retention of children with disabilities in schools: Unavailability of support from peer group students to disabled students by which they are unable to retain themselves in mainstream institutions.

Challenges in Inclusive Set-Up:

- Execution of Policies:The concerned authority should be sincere and committed enough to execute policies regarding inclusive education, and implement the constitutional rights and provisions without considering the loopholes and technicalities.
- Social Attitude towards Disability: We have to organize programmes regarding the spread of awareness related to disabilities and should create a positive social attitude towards disability and differently-abled and marginalized children.
- Resistance of parents: The parents and families of such children should be made aware of such provisions and rights through awareness programmes and advertisements on printed and electronic media.
- Increase skill-based teaching: Trainees of mainstream teacher education centres also should be provided skills for handling such children.
- Link research and practice: Disability focused research and interventions in universities and educational institutions. There should be setting up of centres for disability studies and chair disability studies in universities.
- Peer coaching: There must be Peer Coaching for Improvement of Teaching and Learning in inclusive educational set ups.

Recommendations for Inclusive Education:

1. Gear all teacher education programmes (both pre-service and in-service) to developing the pedagogical skills required in inclusive classrooms.
2. Make the class teacher responsible for all the children in the class. In case special support is required, this should be provided in the form of assistance to the class teacher.
3. Regard all special teachers in a given school as full-fledged members of the school community.
4. Introduce sign language, Braille, and finger Braille as a third language for all children.
5. Inculcate among students with SEN, critical thinking, decision-making, problem-solving, and other coping or life skills to promote their self-reliance and independent living capabilities.

6. Make all schools inclusive by:
- Enforcing without exception the neighbourhood school policy
- Removing physical barriers
- Reviewing barriers created by admission procedures (screening, identification, parental interaction, selection, and evaluation), should include private schools
- Building the capacity of teachers to function in an inclusive setting
- Making the curriculum flexible and appropriate to accommodate the diversity of school children including those with disability in both cognitive and noncognitive areas.
- Making support services available in the form of technology (including ICT), teaching-learning materials and specialists
- Involving parents, family, and the community at all stages of education

7. To inculcate respect for diversity and the concept of an inclusive society the teacher education programmes and the curriculum framework should incorporate a component of human rights education.
8. To nurture all aspects of the personality, viz., cognitive, affective, and connotative—games, dance, drama, music, and art and craft must be given equal importance and value.
9. Admission, retention, and full participation of children in all aspects of education must not be subject to any criteria based on assessment tests and judgment by professionals and experts, including psycho-medical certificates.
10. Incorporate a component of human rights education in teacher education programmes to inculcate respect for diversity and the concept of an inclusive society.

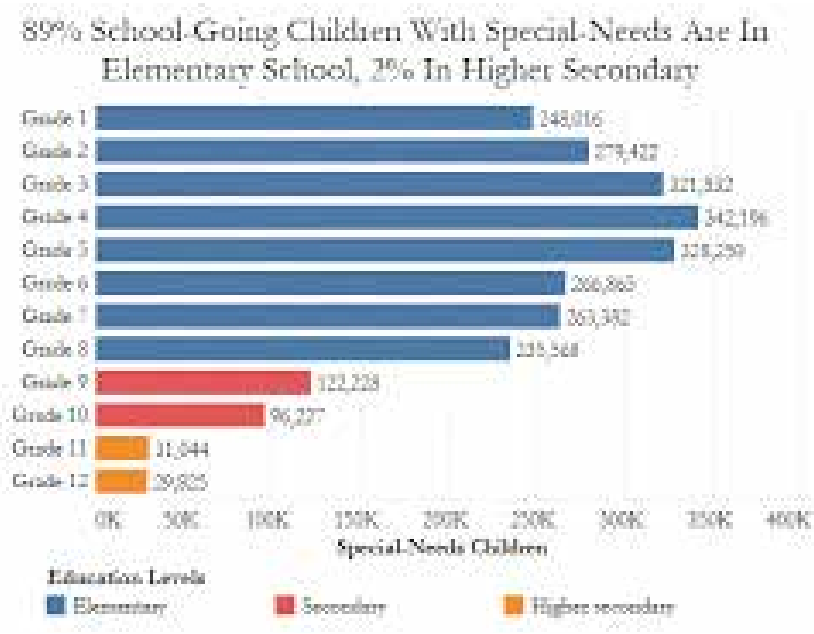

Conclusion:

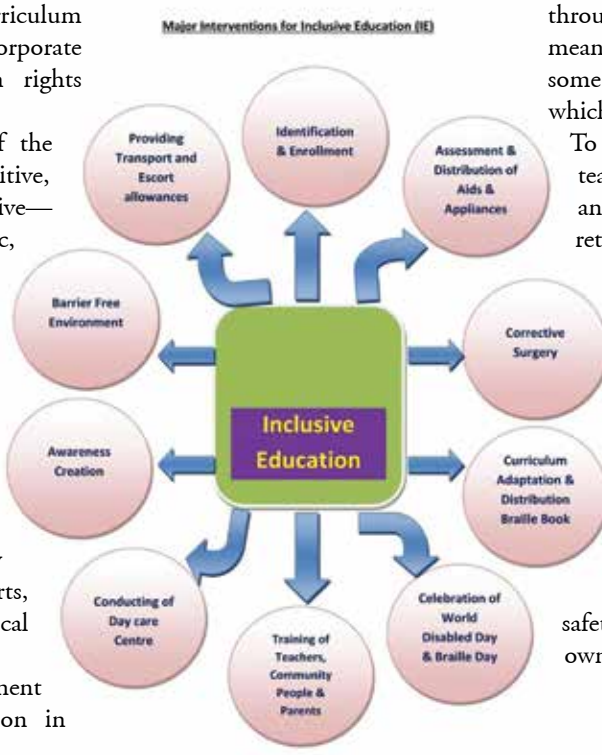

There are several obstacles and challenges related to educational system which hinders to promote inclusive education. It is not impossible to attain success in inclusive education in nation through effective strategies and other means but at the same time there are some issues as well as some challenges which we have handle carefully. To make inclusion appropriate teacher preparation, awareness and attitude towards disabilities, retention of special children etc. must be made compulsory in all programmes irrespective of elementary, secondary level and higher education. Further quality resources, faculties and facilities must be supplied to each institution to make inclusive education programmes successful because every child deserves an education that guarantees the safety to learn in the comforts of one's own skin.

SCERT Haryana, Gurugram

Faced many halts in life

Having an orthodox society,
Took permit from almighty.
Before crossing the sea,
Numbers were his love.
The man who knew infinity.

He lived in the world of number,
Had beaten the numbers definitely.
Exercised with digits, dreamed of digits.
Many theorems were his creativity.
Numbers were his love.
The man who knew infinity.

He loved the equations,
More than the humanity.
Became ideal for the world.
Obsession with digits made him a celebrity.
Numbers were his love,
The man who knew infinity.

Anubhuti
Class X E
Saarthak GIMSSSS, Sector 12A
Panchkula, Haryana

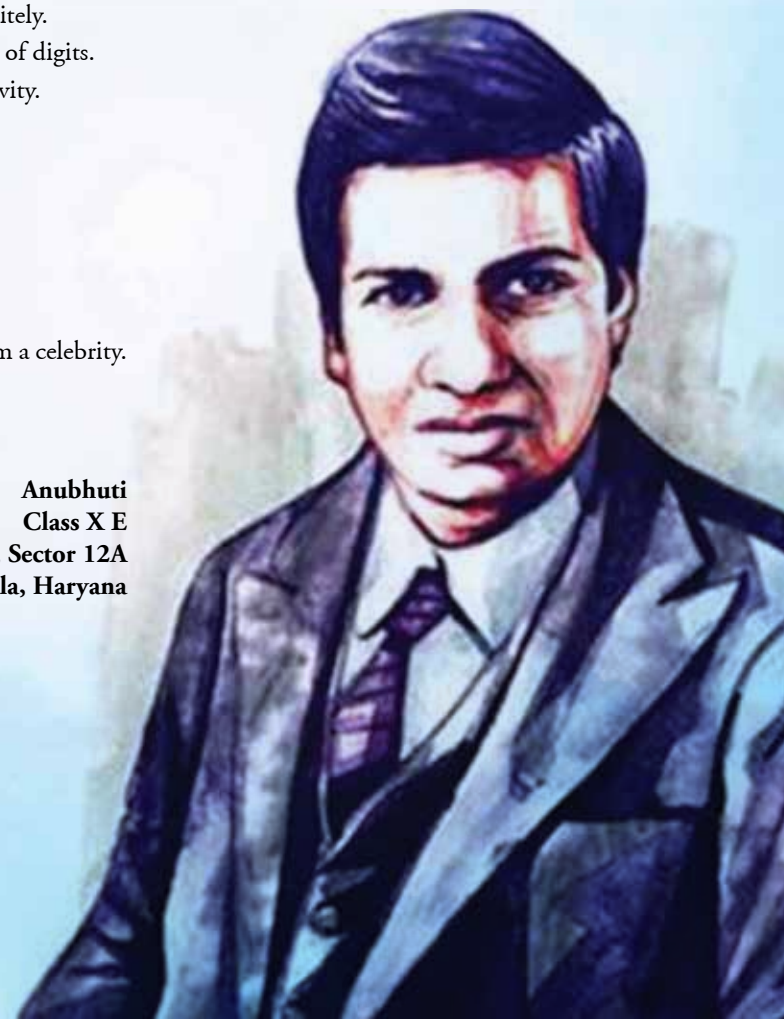

Unique

I take hours to get ready,
But then can keep going for hours.
I like live plants not gifts of dead flowers.
I can hold a tune, but shyly sing in the shower.

I get used and give a lot,
And little in return have I ever got.
I don't show my sorrows easily,
But make people laugh readily.

I'm lazy at times and bit slow,
But also daily to the gym I go.
I write sad poems and happy stories,
I tidy my room and complete my chores.

My body is not in ideal shape,
I struggle forever to lose weight.
And being a foodie, struggle not to eat.
I work out regularly, I'm both fit and fat.

I am fragile and at times, break apart.
But then I get up and make a new start.
I'm not perfect, maybe that's exactly what,
Makes us all so unique somewhat.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

The Significance of Holi Festival

Holi, the festival of colors, is one of the most vibrant and joyous celebrations in Hindu culture. Observed predominantly in India and Nepal, Holi marks the arrival of spring and the victory of good over evil. This colorful festival holds immense significance, both culturally and spiritually, embodying various aspects of Hindu mythology, social harmony, and the renewal of life.

Historical and Mythological Roots:

The roots of Holi can be traced back to ancient Hindu texts, particularly the Puranas and the Mahabharata. One of the most popular legends associated with Holi is the tale of Prahlad and Holika from the Bhagavata Purana. Prahlad, a devout follower of Lord Vishnu, survived multiple attempts by his father, King Hiranyakashipu, to kill him. Holika, the king's sister, attempted to burn Prahlad alive but was instead consumed by the flames herself, while Prahlad emerged unscathed due to his unwavering devotion. Thus, Holi symbolizes the triumph of good over evil and the victory of righteousness.

Another legend linked with Holi is the playful antics of Lord Krishna and Radha. According to folklore, Lord Krishna, used to playfully smear colors on Radha and other Gopis (cowherd girls) in the village of Vrindavan. This playful aspect of Holi is celebrated with great enthusiasm, particularly in the region of Braj, where Lord Krishna spent his childhood.

Cultural and Social Significance:

Holi transcends religious boundaries and is celebrated by people of all faiths across India and beyond. It is a time when social barriers are momentarily forgotten, and people come together to celebrate with colors, music, and dance. The festival promotes unity, brotherhood, and the spirit of togetherness, as people from all walks of life participate in the festivities, exchanging greetings and sweets.

Moreover, Holi is a festival of forgiveness and reconciliation. It provides an opportunity to mend broken relationships, bury the hatchet,

and start anew. The tradition of 'Holika Dahan,' where bonfires are lit to symbolize the burning of negativity and impurities, serves as a metaphor for letting go of past grievances and embracing positivity.

Symbolism and Rituals:

The most iconic aspect of Holi is the throwing and smearing of colored powders and water, known as 'gulal' and 'abir.' These vibrant hues symbolize the diversity of nature, the arrival of spring, and the blossoming of new beginnings. The streets come alive with laughter and merriment as people chase each other with colors, filling the air with joyous shouts of "Holi Hai!"

Traditional rituals associated with Holi vary across regions but often include singing folk songs, performing religious ceremonies, and indulging in festive delicacies. Special Holi sweets such as 'gujiya' and 'thandai' are prepared and shared among family and friends, adding to the festive cheer.

Spiritual Significance:

Beyond its cultural and social aspects, Holi holds deep spiritual significance in Hinduism. It is a time for introspection, self-reflection, and spiritual renewal. The festival coincides with the onset of spring, symbolizing the rejuvenation of nature and the cycle of life. Just as winter gives way to spring, Holi represents the triumph of light over darkness, of hope over despair.

For devotees, Holi is also an occasion to express devotion to the divine through prayers, bhajans (devotional songs), and satsangs (spiritual gatherings). It is believed that participating in Holi celebrations with a pure heart can wash away sins and purify the soul, paving the way for spiritual growth and enlightenment.

Modern Interpretations and Global Appeal:

In recent years, Holi has gained popularity beyond the Indian subcontinent, becoming a global phenomenon celebrated in various parts of the world. Its message of love, joy, and inclusivity resonates with people of diverse cultures and backgrounds, leading to the adoption of Holi-inspired events and parties in cities around the globe.

From colorful music festivals to community gatherings, Holi has found its place in the global cultural calendar, transcending borders and fostering cultural exchange. Its appeal lies in its universality – the simple yet profound joy of coming together, letting go of inhibitions, and embracing the vibrant tapestry of life.

Conclusion:

In essence, Holi is more than just a festival of colors; it is a celebration of life itself. Through its rich tapestry of mythology, culture, and spirituality, Holi encapsulates the essence of Hindu philosophy – the eternal battle between good and evil, the cyclical nature of existence, and the ultimate triumph of love and compassion. As millions of people gather each year to revel in its kaleidoscopic splendor, Holi continues to inspire, unite, and uplift hearts, reminding us of the timeless message of joy, harmony, and renewal.

Martyrdom Day: March 23

March 23 holds profound significance in the history of India as Martyrdom Day, a day dedicated to remembering the sacrifices of three iconic figures of the Indian independence movement: Bhagat Singh, Shivaram Rajguru, and Sukhdev Thapar. Their martyrdom on March 23, 1931, at the hands of the British colonial authorities left an indelible mark on the collective consciousness of the nation, inspiring generations of Indians in their struggle for freedom, justice, and equality.

The story of Bhagat Singh, Rajguru, and Sukhdev is one of unwavering commitment, courage, and sacrifice. Born into humble backgrounds, they were deeply influenced by the prevailing socio-political conditions of their time, marked by British colonial rule, economic exploitation, and social inequality. Motivated by a fervent desire to free their motherland from foreign domination and to establish a society based on principles of equality and justice, they dedicated their lives to the cause of Indian independence.

Bhagat Singh, often referred to as the "Shaheed-e-Azam" (Martyr of the Nation), emerged as one of the most prominent and charismatic leaders of the Indian freedom struggle. His intellectual acumen, fiery spirit, and uncompromising commitment to the cause made him a symbol of resistance against British imperialism. From an early age, Bhagat Singh was drawn to revolutionary ideas and was deeply influenced by socialist and Marxist ideologies. He believed in the power of armed struggle as a means to overthrow colonial rule and to usher in a new era of freedom and social justice.

On March 23, 1931, Bhagat Singh, along with his comrades Rajguru and Sukhdev, was executed by hanging in Lahore Central Jail for his involvement in the killing of British police officer John Saunders. Despite facing brutal torture and imprisonment, they remained steadfast in their convictions, refusing to back down or betray their comrades. Their defiance in the face of oppression and their willingness to sacrifice their lives for the cause of independence earned them widespread

admiration and reverence among the Indian populace.

The martyrdom of Bhagat Singh, Rajguru, and Sukhdev galvanized the Indian independence movement and served as a rallying cry for millions of Indians who were yearning for freedom. Their sacrifice became a catalyst for mass mobilization and inspired countless others to join the struggle against British rule. In the words of Bhagat Singh himself, "They may kill me, but they cannot kill my ideas. They can crush my body, but they will not be able to crush my spirit."

March 23 is observed as Martyrdom Day across India, with tributes, ceremonies, and events held to honor the memory of Bhagat Singh, Rajguru, and Sukhdev. Schools, colleges, and institutions organize seminars, debates, and cultural programs to educate the younger generation about the sacrifices made by these brave freedom fighters and to instill in them a sense of pride and patriotism. Political leaders, social activists, and ordinary citizens pay homage to the martyrs at their memorials and statues, reaffirming their commitment to upholding the values of freedom, democracy, and secularism.

The legacy of Bhagat Singh, Rajguru, and Sukhdev continues to inspire successive generations of Indians in their quest for justice, equality, and human dignity. Their struggle against colonial oppression and their vision of a free and egalitarian society remain relevant today, as India grapples with issues of social justice, communal harmony, and economic inequality. The principles for which they lived and died – secularism, socialism, and democracy – serve as guiding beacons for the nation as it strives to fulfill the aspirations of its people.

However, while March 23 is a day of remembrance and homage, it is also a time for introspection and action. It reminds us of the unfinished agenda of the Indian freedom struggle – the quest for social and economic justice, the protection of minority rights, and the preservation of democratic institutions. It calls upon us to confront the challenges facing the nation with the same spirit of courage, resilience, and determination that characterized the lives of Bhagat Singh, Rajguru, and Sukhdev.

As India commemorates Martyrdom Day on March 23, let us honor the memory of these brave souls by rededicating ourselves to the ideals for which they fought and sacrificed. Let us strive to build a society based on the principles of equality, justice, and fraternity, where every individual can live with dignity and freedom. And let us never forget the sacrifices of those who came before us, for their courage and determination continue to inspire us in our journey towards a better, brighter future for India.

The Magic of Vasant Panchami

Once upon a time, in a small village nestled among rolling hills and blooming fields, there lived a young girl named Maya. Maya was bright-eyed and curious, with a heart as golden as the sun that kissed the earth each morning.

In Maya's village, the arrival of spring was celebrated with great joy and fervor. And at the heart of this celebration was Vasant Panchami, a festival dedicated to Saraswati, the goddess of wisdom, knowledge, and art.

As Vasant Panchami approached, Maya's excitement bubbled like a pot of simmering stew. She couldn't wait to take part in the festivities and honor Saraswati, whom she admired for her grace and wisdom.

On the morning of Vasant Panchami, Maya woke up before the sun had even stretched its rays across the horizon. She hurriedly dressed in her finest attire—a vibrant yellow dress adorned with flowers—and rushed outside to join the villagers in the town square.

The air was filled with the sweet scent of jasmine and marigold as Maya made her way through the bustling crowd. Colorful banners fluttered in the breeze, and musicians played cheerful melodies on their instruments.

In the center of the square stood a beautiful altar adorned with flowers and fruits, dedicated to Saraswati. Maya approached the altar with reverence, bowing her head in prayer before lighting a candle as an offering.

Suddenly, a soft voice whispered in Maya's ear, "Do you seek wisdom, young one?"

Startled, Maya turned around to find an elderly woman with twinkling eyes standing behind her. The woman's silver hair cascaded down her back like a waterfall, and her wrinkled face bore

the marks of countless smiles.

"Yes," Maya replied, her heart pounding with excitement. "I seek wisdom and knowledge, so I may learn and grow."

The elderly woman nodded knowingly and reached into the folds of her cloak, producing a small, intricately carved flute. She handed it to Maya with a smile.

"This flute holds the magic of Saraswati," the woman said. "Play it with sincerity and an open heart, and you shall receive the wisdom you seek."

With trembling hands, Maya accepted the flute and held it close to her heart. She closed her eyes and began to play, letting the music flow from her soul.

As the notes danced through the air, something incredible happened. The sky above them seemed to brighten, and a gentle warmth enveloped the village like a loving embrace. Flowers bloomed in every color imaginable, and the trees whispered secrets of the earth.

Maya's heart swelled with joy as she continued to play, feeling the wisdom of Saraswati coursing through her veins. She understood now that true wisdom was not found in books or scrolls, but in the melodies of the heart and the whispers of nature.

When Maya finally stopped playing, the villagers erupted into applause, their faces alight with wonder and awe. They had witnessed the magic of Vasant Panchami firsthand, and they knew that their lives would never be the same.

From that day forward, Maya continued to play her flute, spreading joy and wisdom wherever she went. And though she grew older and her hair turned silver like the elderly woman's, her spirit remained as bright and vibrant as the sun that shone down on her beloved village.

And so, dear children, remember the magic of Vasant Panchami, and never forget the wisdom that lies within your heart. For like Maya, you too can unlock the secrets of the universe and spread joy to all who cross your path.

Whatever the problem, be part of the solution

Dr. Himanshu Garg

Problems are the part and parcel of life. All problems are due to some reasons. We must never run away when we have problems. The best way to escape from problems is to solve it. Every problem comes with a solution. It depends on us how we treat it. Whether we find a solution to problems or think again and again of the problem.

One day a professor came to his class and began his lecture by holding up a glass of water. The glass has some water in it. He held it up for all to see and asked the students, "How much do you think this glass weighs? " The students started giving approximate answers in grams. Then the professor replied, "I really don't know the actual weight of this glass". But it is not heavy as you all said. Then the professor called one student near him and instructed him to hold it up. After few minutes, the professor asked, "How are you feeling? " The student said, "Ok Sir, No problem at all". After an hour, the professor asked, "Now, how are you feeling? " The student said, "Sir, there is so much pain in my arm". The professor again asked, " What would happen if you held it for a day? " The students replied, " He might have muscle stress and paralysis and have to go to the hospital for sure." The professor instructed the student to put the glass down. Then the professor asked, " Did the weight of water change during all this? " All said, "No". Now the professor asked the reason for arm pain and the solution of that problem. The students were puzzled and then realized the exact reason. The reason of pain is the holding of the glass for a long time and the only solution is to put the glass down.

The problems of our life are something like this. If we hold the problems for few minutes in our head, they seem ok. But if we think about them for a long time, they begin to cause trouble. They may cause depression, heart attack etc. They become more serious if we hold them even longer.

It is necessary to think of the problems in your life to solve them. But it is mandatory to 'Put them down' before you sleep for a fresh and energetic morning.

Asstt. Professor
Govt. College for Women, Jind

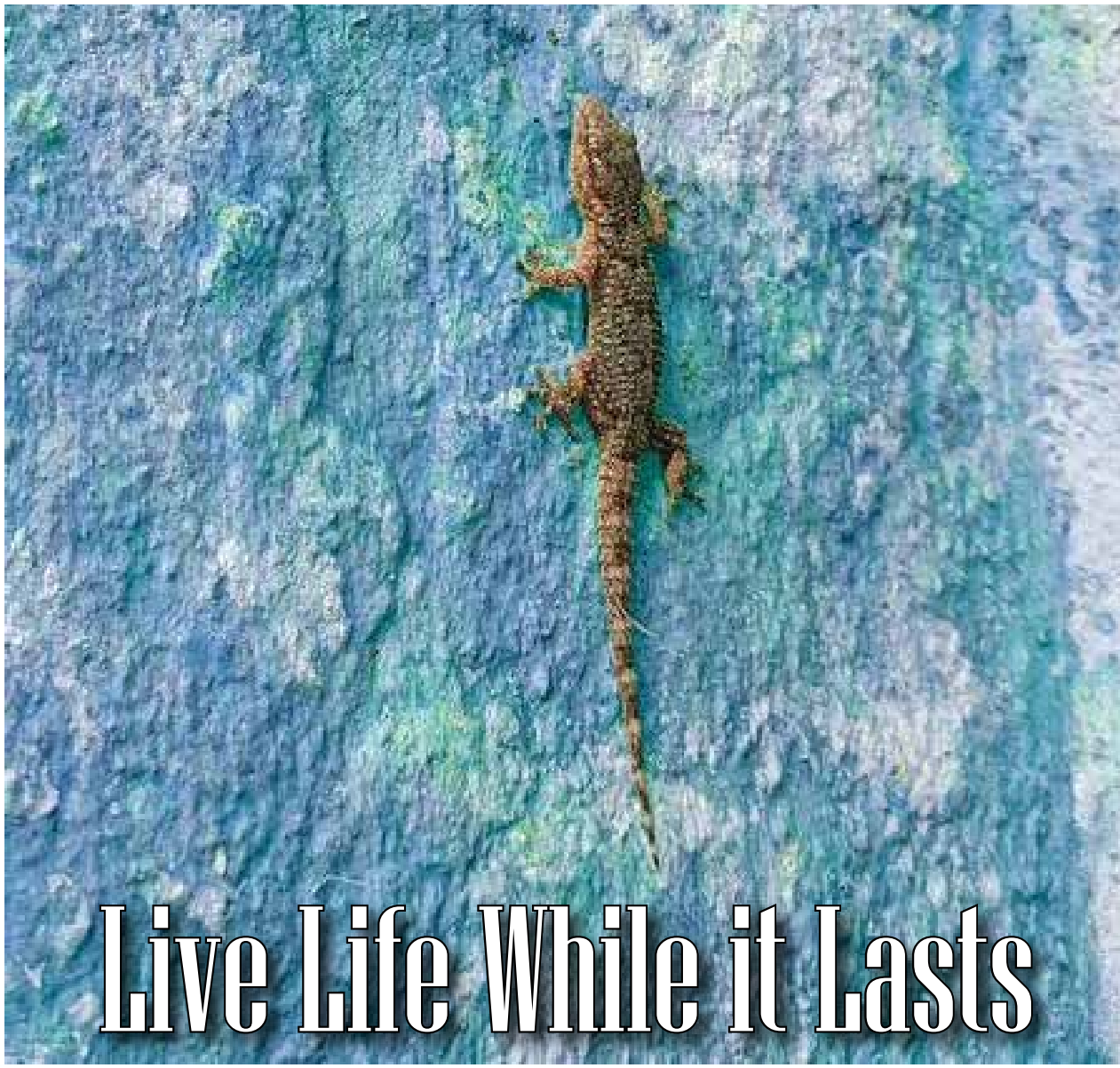

Live Life While it Lasts

Live your life fully, lest you become,
A piece of furniture or simply no one,
Like a lizard clinging to the wall, unmoving.
Or a bed for infants, that's only for caring.

Lap chair for children to sleep and rest,
Walking stick for elders or an armrest.

Don't become fine layers of dust on couch covers,
Or like cobwebs that can't be reached in corners.

So live your life fully while it still lasts,
Go on now, get moving and have a blast.

Dr. Deviyani Singh
deviyanisingh@gmail.com

Amazing Facts

1. The most popular Twizzler candy flavour is strawberry.
2. Thirty percent of all bingo players are under the age of 35.
3. Infants spend more time dreaming than adults do.
4. The famous Casanova (Giacomo Casanova) was a librarian for many years before he died.
5. The only species of turtle that lives in the open ocean is the sea turtle.
6. Toronto was the first city in the world with a computerized traffic signal system.
7. The longest freshwater shoreline in the world is located in the state of Michigan.
8. There are bananas called "Red banana" that are maroon to dark purple when ripe.
9. Franklin Pierce was the first U.S. President to have a Christmas tree in the White House.
10. The USA bought Alaska from Russia for 2 cents an acre.
11. Walt Disney had originally suggested using the name Mortimer Mouse instead of Mickey Mouse.
12. The average life span of a single red blood cell is 120 days.
13. Over 250 million Slinky toys have been sold since its debut in 1946.
14. The last thing Elvis Presley ate before he died was four scoops of ice cream and 6 chocolate chip cookies.
15. Some Chinese chopsticks contain gold as one of their materials.
16. The chances of making two holes-in-one in a round of golf are one in 67 million.
17. The watch was invented by Peter Henlein of Nuremberg in 1510.
18. The game Monopoly was once very popular in Cuba; however, Fidel Castro ordered that all games be destroyed.
19. Nearly half of all Americans suffer from symptoms of burnout.
20. During the era of Louis XIV, women used lemons to redden their lips.
21. 70% of the poor people in the world are female.
22. The thickness of the Arctic ice sheet is on average 10 feet. There are some areas that are thick as 65 feet.
23. The adult human body requires about 88 pounds of oxygen daily.
24. The biggest pumpkin the world weighs 1,337.6 pounds.
25. The highest consumption of Pizza occurs during Super Bowl week.
26. There are about 6,800 languages in the world.
27. Studies have shown that by putting on slow background music it can make a person eat food at a slower rate.
28. By walking an extra 20 minutes every day, an average person will burn off seven pounds of body fat in an year.
29. Ironically, when doctors in Los Angeles, California went on strike in 1976, the daily number of deaths in the city dropped 18%.
30. Octopus and squid are thought to be the most intelligent of all invertebrates.

https://greatfacts.com/

1. What word makes five new words when prefixed with: Form, Fume, Jury, Son, and Verse? **Per**
2. What term, originally German, refers to the imprint in snow made when falling backwards: Fallenbach; Schnodent; Gappeneitz; or Sitzmark? **Sitzmark**
3. Named onomatopoeically, a sistrum is an ancient Egyptian instrument of: Musical percussion; Torture; Water-dowsing; or Navigation? **Musical percussion**
4. From Latin meaning 'stake', what is the hinged or pivoted catch preventing reverse motion of a ratchet wheel: Pawl; Stawl; Rawl; or Yawl? **Pawl**
5. What traditional strong ceramic material is named ultimately from a pig? **Porcelain**
6. What does the Greek prefix 'iso' mean: Many; Long; Equal; or Two? **Equal**
7. How many curves characterize a Cupid's Bow: One; Two; Three; or Four? **Two**
8. Superannuation is an alternative (and Australian/NZ) term for what sort financial payment scheme? **Pension/Retirement**
9. The mythological Phoenix bird originally and essentially symbolized: Fire; Ashes/Remains; Flight; or Rebirth? **Rebirth**
10. What part of the human body contains bone-forms called Phalange, Cuneiform, Talus and Calcaneus? **Foot**
11. What legendary man-trapping creature is actually the world's the largest living bivalve mollusk? **Giant Clam**
12. Musk, a common basic fragrance, takes its name from Sanskrit 'muska' meaning: Flower; Deer; Lemon; or Scrotum? **Scrotum**

13. The roadrunner (Geococcyx, or chaparral bird) is a member of which bird family: Loon; Cuckoo; Stork; Ostrich? **Cuckoo**
14. What swirly pattern is named after the administrative central town of Renfrewshire in Scotland? **Paisley**
15. What does the pencil grade HB stand for? **Hard Black**
16. What characteristic of Borneo ranks it among the largest five globally: Island; Mountain; Lake; or Population? **Island**
17. The Malayalam language is from, and still used by over 30 million people in: China; Malaysia; India; or Australia? **India**
18. Copra is the dried white meat or flesh of what? **Coconut**
19. What does the internet top level domain '.cat' represent? **Catalan**
20. What term refers to a traditional alternative to electronic or digital technology, and separately to something which corresponds to another? **Analogue**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-174-general-knowledge/

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का जनवरी-फरवरी, 2024 का अंक पढ़ने का अवसर मिला। इस अंक में आकर्षक रंगीन पृष्ठ और छायांकन पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। 'परीक्षा पर चर्चा' को समर्पित यह अंक अत्यंत ज्ञानवर्धक लगा। डॉ.प्रदीप राठौर ने 'परीक्षाओं को उत्सव समझें, बोझ नहीं' आलेख का प्रस्तुतीकरण शानदार अंदाज़ में किया है। इसी क्रम में गौरीशंकर वैश्य, सूर्यकांत यादव व सुमन मलिक का आलेख भी सराहनीय है। 'बाल सारथी' बच्चों के लिए रोचक और ज्ञानवर्धक है। अंत में एक आकर्षक अंक को पाठकों तक पहुँचाने के लिए समस्त सम्पादक मंडल को अनेकानेक शुभकामनाएँ व धन्यवाद।

देवेन्द्र गौड़
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय आदर्श संस्कृति प्राथमिक पाठशाला
ऊँचा गाँव, वल्लभगढ़, जिला-फरीदाबाद, हरियाणा

आदरणीय संपादक महोदय!

सादर नमस्कार।

परीक्षा को समर्पित 'शिक्षा सारथी' का बहु-उपयोगी अंक पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसमें विद्यार्थी परीक्षा को कैसे रोचक व उत्सव के रूप में मना सकते हैं, का बहुत ही सुंदर ढंग से वर्णन किया गया है। पत्रिका के इस अंक में माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 'परीक्षा पर चर्चा' के सभी संस्करणों में विद्यार्थियों को परीक्षा की अच्छी तैयारी व तनाव से बचने के लिए जो उपयोगी बातें बताई गई हैं, उन्हें एक ही स्थान पर संकलित कर लिया गया है। सुरेखा रानी द्वारा लिखित आलेख 'सावन मिटान ने हासिल की चित्रकला में महारत' सभी बच्चों के लिए प्रेरक है। स्थायी बाल-स्तंभ 'बाल सारथी' व अन्य आलेख भी सराहनीय हैं। 'शिक्षा सारथी' संपादक मंडल को इसके लिए बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ।

पिंकी शर्मा
संस्कृत अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय
फिदेरी, जिला-रेवाड़ी, हरियाणा

मिशन कर्मयोगी

हरियाणा सरकार ने अब ये ठाना है।
'मिशन कर्मयोगी' को सफल बनाना है।

सरकारी कर्मचारियों की,
दक्षता को बढ़ाना है।
कौशलों का उनमें,
विकास खूब करना है।
हरियाणा सरकार...
मिशन कर्मयोगी...

सोच और दृष्टिकोण को,
आधुनिक बनाना है।
कर्मचारियों में अब,
सेवा भाव को जगाना है।
हरियाणा सरकार...
मिशन कर्मयोगी...

आत्मबल के विश्वास,
को सभी में जगाना है।
काम के प्रति स्वाभिमान,
को बढ़ाना है।
हरियाणा सरकार...
मिशन कर्मयोगी...

श्रेयस का मार्ग,
अब हमें अपनाना है।
जागरूकता के साथ,
कर्तव्य निभाना है।
हरियाणा सरकार...
मिशन कर्मयोगी...

आतंरिक और बाह्य फल,
प्राप्त हमें करने हैं।
उच्चतम लक्ष्यों को,
हासिल हमें करना है।
हरियाणा सरकार...
मिशन कर्मयोगी...

कविता
प्राथमिक अध्यापिका
राप्रा विद्यालय सराय अलावर्दी, गुरुग्राम (हरियाणा)

RNI NO: HARBIL/2012/52385

POSTAL REGD NO: HR/AB-102/23-25

ऋतुराज वसंत

लो आया ऋतुराज वसंत
हो चला पाले का अंत ।
सरसों के खिले पीले फूल,
जौ -गेहूँ परआई बालियाँ
शबनम ने धोई कली की धूल,
कोमल किसलय फूट पड़ी,
आ गया उनमें फिर से तंत।
लो आया ऋतुराज वसंत।।
माँ शारदे बुद्धि का वर दे,
अज्ञानता का तिमिर मिटा,
ज्ञान उजियारा कर दे,
सदाचारी हों जीवन में
बनें धीर-वीर और बलवंत।
लो आया ऋतुराज वसंत।।
फूलों पर मँडराये मधुकर,
उद्यानों की सैर करें तब
उर आनंद हो गुंजन सुनकर,
डाल आम की लदी बौर से
अब बीत चला हेमंत ।
लो आया ऋतुराज वसंत।।
दसों दिशा वासंती धूम,
ओढ़े चुनरिया रंग बसंती
यौवन रहा हो मद में झूम,
केसरिया हरि मनभाए
रहा बिखर चहुँ ओर अनंत।
लो आया ऋतुराज वसंत।।
हो चला पाले का अंत।
लो आया ऋतुराज वसंत।।

हरिनिवास
प्राथमिक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
परखोतमपुर
रेवाड़ी, हरियाणा